कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

▸ भोपाल मंगलवार 12 से 18 अगस्त 2025 ▸ वर्ष-26 ▸ अंक-12 ▸ पृष्ठ-20 ▸ मूल्य-20 रु. ▸ RNI No. MP HIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

KRISHAK
50 Years of Cultivating Prosperity

PAUSHAK SUPER STAR
फसल छप्परफाड़

इस स्वतंत्रता दिवस पर चुनिए वो समाधान जो है
Patented | CIB Registered | Trusted by Millions

- बेहतर फसल वृद्धि
- तनाव से लड़ने की ताकत
- भरपूर उपज

कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्रा. लि.
की ओर से समस्त देशवासियों को
15 अगस्त की हार्दिक शुभकामनाएं!

कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड
कार्यालय: 1115, हेमकुन्ट (मोदी) टावर, 98, नेहरु प्लेस, नई दिल्ली– 110019
टोल फ्री नंबर: 1800–572–5065 | वेबसाइट: www.krepl.in

यहाँ स्कैन करें और हमारे अन्य उत्पादों को जानें

VAL

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाये

विनुथना एग्रोटेक एल.एल.पी
कार्यालय :- 7-1 621 /98 , एस.आर नगर
मेन रोड, हैदराबाद, ph : 040 -66687275
अधिक जानकारी के लिए इसे स्कैन करें
www.vnuthna.com

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

किसानों का हित भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता : श्री मोदी

डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन शताब्दी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित आईसीएआर पूसा में एमएस स्वामीनाथन शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन का विषय- सदाबहार क्रांति, जैव-खुशी का मार्ग, सबके लिए भोजन सुनिश्चित करने के लिए प्रोफेसर स्वामीनाथन के आजीवन समर्पण को दर्शाता है।

इस मौके पर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा, कि स्वर्गीय डॉ. एमएस स्वामीनाथन ने खाद्य सुरक्षा को अपने जीवन का मिशन बना लिया था। एमएस स्वामीनाथन को कृषि विज्ञान में उनके अग्रणी कार्य के लिए व्यापक रूप से सराहा जाता है। उन्होंने कहा किसानों का हित भारत की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार की नीतियों को स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत किसानों, मछुआरों और डेयरी किसानों के हितों से कभी समझौता नहीं करेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कार्यक्रम में हरित क्रांति के जनक कहे जाने वाले महान वैज्ञानिक का स्वामीनाथन के सम्मान में एक स्मारक सिक्का और डाक टिकट भी जारी किया।

डॉ. स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रांति के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने 1960 के दशक में उच्च उपज वाली गेहूं की किस्मों और आधुनिक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देकर भारत की खाद्यान्न पैदावार में क्रांतिकारी बदलाव किया।

स्वामीनाथन का पूरा जीवन किसानों को समर्पित : श्री चौहान

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने डॉ. स्वामीनाथन की विरासत को याद करते हुए कहा दूसरों के लिए जीना ही सच्चा जीवन है। स्वामीनाथन ने पूरी जिंदगी किसानों, विज्ञान और समाज को समर्पित कर दी। यदि हम उनके मार्ग पर चलते रहेंगे तो न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में भूख और अभाव खत्म किया जा सकता है। श्री चौहान ने बताया कि डॉ. स्वामीनाथन ने कृषि विज्ञान के माध्यम से भूख मिटाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। 1966 में जब भारत में मैक्सिको से 18,000 टन गेहूं आया था, स्वामीनाथन ने पंजाब की किस्मों के साथ इसका संकरण कर एक नई संकर किस्म विकसित की।

खरीफ फसलों की बुवाई में 5 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली। इस साल अच्छी मानसूनी बारिश का असर खरीफ फसलों की बुवाई पर साफ दिख रहा है। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार 1 अगस्त तक देश भर में खरीफ फसलों का कुल रकबा 5.1 फीसदी बढ़कर 932.93 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। पिछले साल समान अवधि में यह आंकड़ा 887.97 लाख हेक्टेयर था।

इस सत्र में धान का रकबा पिछले साल के 273.72 लाख हेक्टेयर के मुकाबले 16.7 फीसदी बढ़कर 319.4 लाख हेक्टेयर हो गया है। एक तरफ जहां अनाजों की बुवाई बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर दलहन और तिलहन फसलों की

दलहन-तिलहन की बुवाई पिछड़ी

बुवाई पिछड़ी है। कुल दलहन फसलों का रकबा पिछले साल के 101.54 लाख हेक्टेयर से मामूली घटकर 101.22 लाख हेक्टेयर रह गया है। इसमें अरहर की बुवाई 6.7 फीसदी घटकर 38.32 लाख हेक्टेयर और उड़द की बुवाई 2.5 फीसदी घटकर 18.62 लाख हेक्टेयर रह गई है। वही, मूंग की बुवाई में 3.4 फीसदी की बढ़त देखी गई है। तिलहन फसलों का रकबा भी 4 फीसदी घटा है। सोयाबीन की बुवाई 4 फीसदी नीचे गिरकर 118.54 लाख हेक्टेयर और मूंगफली की बुवाई 4.3 फीसदी घटकर 41.56 लाख हेक्टेयर रह गई है।

पोषक तत्वों से भरपूर मोटे अनाजों का कुल रकबा 4.7 फीसदी बढ़कर 172.57 लाख हेक्टेयर हो गया है। इसमें मक्का की बुवाई में 11.7 फीसदी की शानदार बढ़ोतरी हुई है। लेकिन बाजरा, ज्वार और रागी की बुवाई में कमी आई है। बाजरा और ज्वार का रकबा मामूली रूप से घटा है, जबकि रागी की बुवाई में कमी देखी गई है।

पौध संरक्षण विशेषांक में पढ़िये...

- सोयाबीन की कीटों से सुरक्षा 5
- धान को बचायें कीटों से 7
- तिल की फसल को रोगों से बचायें 8
- मक्के की फसल में फाल आर्मी वर्म का प्रबंधन 9
- प्राकृतिक खेती से फसल सुरक्षा 10
- अरहर की फसल में समन्वित कीट 11
- वर्षाकालीन सब्जियों की रोगों से सुरक्षा 13

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

किसान एफपीओ के माध्यम से अपने उत्पादों का बढ़ाएं दायराः मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राज्य सरकार किसानों की आय बढ़ाकर स्वर्णिम मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए संकल्पित है। प्रदेश के औद्योगिकीकरण में फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़कर लगभग 55 लाख हेक्टेयर हो गया है।

किसानों को बिजली बिल से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से सिंचाई के लिए 32 लाख सोलर पंप बांटने का कार्य प्रारंभ हो चुका है। प्रदेश में खेती का दायरा लगातार बढ़ रहा है। राज्य की कृषि उत्पादकता अच्छी है और अब हम फूड प्रोसेसिंग में अग्रणी राज्य बनने की ओर अग्रसर हैं। डॉ. यादव ने कहा कि किसान उत्पादक संगठन केवल किसानों से फसल खरीदने तक सीमित न रहें, बल्कि अनाज और अन्य उत्पादों की प्रोसेसिंग कर उसे बाजार में बेचें, जिससे एफपीओ से जुड़े किसान सदस्यों को सीधे तौर पर लाभ मिलेगा।

डॉ. यादव राज्य कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्था में समृद्ध एफपीओ-आत्मनिर्भर किसान-विकसित भारत संकल्प के अंतर्गत एफपीओ फेडरेशन मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित एफ.पी.ओ. डायरेक्टर समिट-2025 को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने फूड प्रोसेसिंग को 5 प्रतिशत से बढ़ाकर 95 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ किसानों को फूड प्रोसेसिंग से जोड़ा जा रहा है। मालवा अंचल में आलू चिप्स निर्माण के लिए बड़ा उद्योग स्थापित किया जा रहा है। प्रदेश के औद्योगिकरण में एफपीओ की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। एफपीओ केवल फूड प्रोसेसिंग ही न करें, बल्कि वेयर हाउसिंग और लॉजिस्टिक्स में भी योगदान दें। एफपीओ के माध्यम से किसान अपने उत्पादों का दायरा बढ़ाएं। सरकार सभी प्रकार के उद्योगों को बिजली, पानी और जमीन देकर हर संभव सहयोग प्रदान कर रही है।

डॉ. यादव ने कहा कि आज उत्पादन बढ़ाने के लिए फसलों में रासायनिक दवाओं के उपयोग की चुनौतियां आ रही हैं। प्रदेश में पारंपरिक खेती का दायरा कम हुआ है। पहले जहां चावल उत्पादन नहीं होता था, वहां अब चावल की खेती बढ़ रही है। इसी प्रकार कपास का रकबा कम हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए गतिविधियों के संचालन में राज्य सरकार, भारतीय किसान संघ और मालवम फेडरेशन जैसे संगठनों की सहायता लेगी।

कृषि मंत्री एदल सिंह कंषाना ने कहा कि जब प्रदेश का किसान समृद्ध होगा, तो देश समृद्ध होगा। प्रदेश में खाद की कोई कमी नहीं है। पर्याप्त मात्रा में यूरिया उपलब्ध है, लेकिन डीएपी की थोड़ी कमी है, जिसकी व्यवस्था की जा रही है। प्रदेश में 14 लाख मैट्रिक टन यूरिया और 12 लाख मैट्रिक टन डीएपी उपलब्ध है। सरकार 10 लाख मैट्रिक टन यूरिया किसानों को बांट चुकी है। प्रदेश में पर्याप्त वर्षा हो रही है। बाढ़-बारिश से हुए नुकसान के लिए राज्य सरकार किसानों को उचित मुआवजा प्रदान करेगी।

भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के.साईं रेड्डी ने कहा कि हम देश के 1 लाख गांवों तक जाने के लिए प्रयासरत हैं। भारतीय किसान संघ के अखिल भारतीय संगठन मंत्री दिनेश कुलकर्णी ने कहा कि हम किसानों को समृद्ध बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में सचिव कृषि विभाग निशांत बरवड़े, के.कुमार स्वामी (हुबली), कमल सिंह, महेश सहित किसान संघ के कैलाश सिंह ठाकुर, नारायण यादव, घनश्याम पाटीदार, कमल पाटीदार, सूरज सिंह ठाकुर, अतुल महेश्वरी और बड़ी संख्या में एफपीओ के संचालकगण उपस्थित थे।

श्री के.जे. पटेल ने इफको के नए प्रबंध निदेशक की कमान संभाली

नई दिल्ली। इफको के नए प्रबंध निदेशक के रूप में श्री के.जे. पटेल की नियुक्ति ने भारत के सहकारी क्षेत्र में आशावाद की लहर पैदा कर दी है। लंबे समय से इफको के मजबूत स्तंभ के रूप में काम कर रहे श्री पटेल बढ़ती चुनौतियों और उभरते अवसरों के समय दुनिया की सबसे बड़ी सहकारी उर्वरक निर्माता संस्था की कमान संभाल रहे हैं। जमीनी स्तर के इंजीनियर से संगठन के शीर्ष नेतृत्व पद तक की उनकी यात्रा इफको की प्रतिबद्धता, अखंडता और समावेशी विकास के मूल मूल्यों को दर्शाती है।

श्री पटेल की नियुक्ति एक नियमित उत्तराधिकार से अधिक है, यह निरंतरता, आंतरिक नेतृत्व में विश्वास और संस्थागत संस्कृति की पुनः पुष्टि का प्रतिनिधित्व करती है। उनके पूर्ववर्ती डॉ. यू.एस. अवस्थी ने दशकों तक इफको का नेतृत्व किया और इसे वैश्विक उर्वरक पावरहाउस में बदल दिया। अब श्री पटेल के प्रभारी होने के साथ, संगठन एक नया अध्याय खोलने के लिए तैयार है, जो इसकी विरासत में गहराई से निहित है, साथ ही स्पष्ट रूप से भविष्य केंद्रित भी है।

गुजरात के जामनगर जिले के रहने वाले श्री पटेल ने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिग्री ली है। उन्होंने इफको की कलोल इकाई में अपना करियर शुरू किया, जहां उन्होंने अपने तकनीकी और प्रबंधकीय कौशल का सम्मान करते हुए दो दशकों से अधिक समय बिताया। उन्होंने भारत के सबसे बड़े और सबसे जटिल उर्वरक संयंत्र पारादीप इकाई में तैनात होने से पहले ओमान में एक अंतरराष्ट्रीय कार्यकाल सहित विभिन्न कार्य किए। 2024 में श्री पटेल को इफको के मुख्यालय में निदेशक (तकनीकी) के रूप में पदोन्नत किया गया, जहां उन्होंने सभी नाइट्रोजन और फॉस्फेटिक उर्वरक संयंत्रों में संचालन का पर्यवेक्षण किया। उनके कार्यकाल को संरचित योजना, स्थिरता पहल और रणनीतिक प्रौद्योगिकी उन्नयन द्वारा चिह्नित किया गया था। सहकर्मी उन्हें मृदुभाषी, सहयोगी और व्यवस्थित बताते हैं। श्री पटेल जब इस उच्च-जिम्मेदारी वाली भूमिका में कदम रख रहे हैं, तो वे अपने साथ 35,000 से अधिक कर्मचारियों और लाखों किसान-सदस्यों की उम्मीदें लेकर आए हैं। आगे की यात्रा जटिल हो सकती है, लेकिन उनके नेतृत्व में, इफको नई ऊंचाइयों को छूने के लिए अच्छी तरह से प्रतिबद्ध है। भारत मंडपम नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश से राजेश कुमार मिश्रा उप महाप्रबंधक (विपणन) और डॉ. ओमशरण तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन) ने नवांगतुक प्रबंध निदेशक से मिलकर उन्हें शुभेच्छाएं व्यक्त की।

बागवानी उत्पादों की वैल्यू चेन विकसित करना समय की माँगः श्री राजन

बागवानी उत्पादों के मूल्य संवर्धन के लिए राज्यस्तरीय वेबिनार आयोजित

भोपाल। प्रदेश में बागवानी उत्पादों की मूल्य श्रृंखला (वैल्यू चेन) को सशक्त बनाने के उद्देश्य से उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण विभाग द्वारा म.प्र. में क्लस्टर आधारित फल एवं सब्जी मूल्य श्रृंखला विकास एवं नवाचार और तकनीकी के माध्यम से खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का रूपांतरण विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार अपर मुख्य सचिव उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण अनुपम राजन की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

श्री राजन ने कहा कि बागवानी उत्पादों की वैल्यू चैन विकसित करना समय की मांग है। मध्यप्रदेश उद्यानिकी क्षेत्र में समृद्ध राज्य है। प्रदेश के किसानों को उनके उत्पाद का वाजिब दाम मिल सके। इसके लिए उत्पादन से उपभोक्ता तक की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाया जाना है। इसके लिए विभाग द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे है। उन्होंने किसानों, किसान संगठनों, खाद्य प्रसंस्करण उद्यमियों तथा रिसोर्स पर्सन तथा उद्यानिकी अमले के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता बताई।

आयुक्त उद्यानिकी तथा खाद्य प्र-संस्करण प्रीति मैथिल ने कहा कि इस वेबिनार का मुख्य उद्देश्य, बागवानी उत्पादों की मूल्य श्रृंखला को सशक्त बनाना है, इससे किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को सशक्त बनाना है।

अपर संचालक उद्यानिकी के.एस. किराड़ ने कहा कि बागवानी किसानों को अधिक लाभ उपलब्ध कराने के लिए उत्पादों को नवीन तकनीक तथा नवाचार के माध्यम से प्रसंस्कृत कर मूल्य वर्धन आवश्यक है। वेबिनार में कृषक संगठनों के प्रतिनिधि, खाद्य प्रसंस्करण उद्यमी, जिला रिसोर्स पर्सन, उद्यानिकी विभाग का मैदानी अमला सम्मिलित हुआ।

- **डॉ. पी.एल. अम्बुलकर**
  वरिष्ठ वैज्ञानिक, पौध संरक्षण (कीट शास्त्र)
- **श्वेता मसराम**
  वरिष्ठ तकनीकी सहायक
- **अवधेश कुमार पटेल**
  वरिष्ठ तकनीकी सहायक

कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)

सोयाबीन की कीटों से सुरक्षा

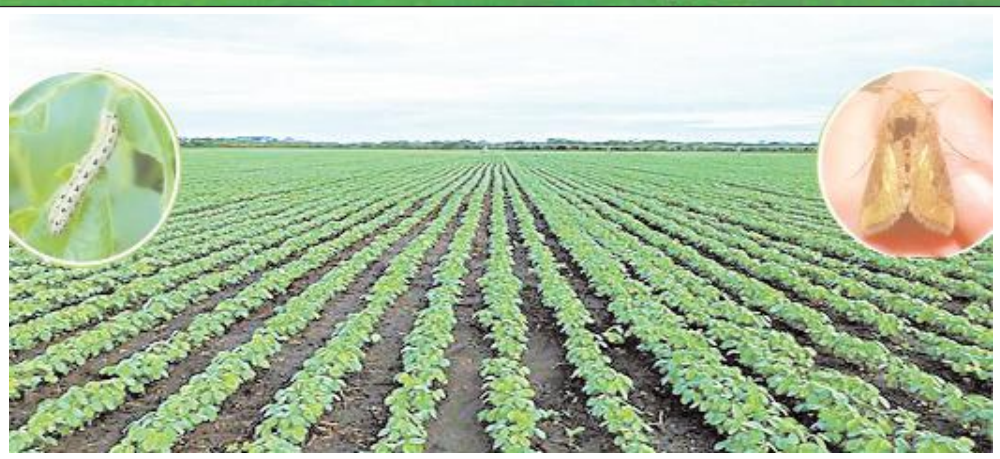

सोयाबीन, जिसे ग्लाइसिन मैक्स भी कहा जाता है, पूर्वी एशिया का एक फलीदार पौधा है, जिसके बीजों का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जाता है। यह प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा का एक उत्कृष्ट स्रोत है।

सोयाबीन को गोल्डन बीन्स के रूप में भी जाना जाता है और यह लैग्यूम परिवार का सदस्य है। सोयाबीन एक बहुमुखी फसल है जो न केवल पोषण प्रदान करती है, बल्कि आर्थिक रूप से भी महत्वपूर्ण है परंतु इसके उत्पादन को कीट व्याधियां प्रभावित करते हैं।

सोयाबीन के प्रमुख कीट एवं प्रबंधन

गर्डल बीटल

क्षति: इस कीट की ग्रब अवस्था हानिकारक होती है। इसका वयस्क भी पत्तियों को खुरचकर हानि करता है। मादा वयस्क द्वारा अण्ड निरोपण हेतु मुख्य तने पर समानांतर चक्र या गर्डल बनाये जाने पर उस स्थान से ऊपर का भाग सूखकर मुरझा जाता है। बाद की अवस्थाओं में पौधे को जमीन से लगभग 15 से 25 सेमी ऊपर से काट दिया जाता है।

प्रबंधन

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- मानसून आने पर बुवाई करें।
- अनुशंसित मात्रा में बीज (80-100 किग्रा. प्रति हे.) का उपयोग करें।
- अंतरवर्ती फसल के रुप में मक्का या ज्वार लगायें।
- फसल चक्र अपनायें।
- अधिक नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का उपयोग न करें।
- पौधे के क्षग्रिस्त भागों एवं अण्डों के समूह को एकत्रकर नष्ट करें।
- गर्डल बीटल की आबादी पर नजर रखने और उसे कम करने के लिए संक्रमित पौधों के हिस्सों को कम से कम 10 दिनों में एक बार हटा दें और उन्हें खाद के गड्ढे में दबा दें।
- रासायनिक नियंत्रण हेतु क्लोरएन्ट्रा-निलीप्रोल 18.5 एस.ई. 150 मिली. या थायोमिथाक्जाम 12.6%+ लेम्डासायलोथ्रील 9.5% 125- 130 मिली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सोयाबीन तना मक्खी

क्षति: इस कीट की इल्ली (मेगट) अवस्था ही हानिकारक होती है। नवविकसित मेगट पत्तियों के डंठलों से तने के अंदर घुसती है और टेढ़ी- मेढ़ी सुरंग बनाती है। ग्रसित पौधों में पत्तियों का ऊपरी भाग सूख जाता है। कीट का प्रकोप आंतरिक होने से प्रारंभिक आक्रमण का पता नही लगता हैं, परंतु इन पौधों के तनों पर एक छोटा सा छिद्र दिखाई देता है।

प्रबंधन

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें
- मानसून पूर्व बुवाई न करें।
- अनुशंसित मात्रा मे बीज का उपयोग करे एवं उचित दूरी पर बुवाई करें।
- रासायनिक प्रबंधन हेतु क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.ई. 150 मिली. या थायोमिथाक्जाम 12.6%+ लेम्डासायलोथ्रील 9.5%125-130 मिली. प्रति हेक्टेयर छिड़काव कर या थायोमिथाक्जाम 25 डब्लयू जी. 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

सेमीलूपर

क्षति: पत्तियों का पूरी तरह क्षतिग्रस्त और पौधा सफेद हो जाता है। लार्वा पत्ती की कलियों, फूलों, कोमल फलियों और विकसित हो रहे बीजों को खाते हैं। फटी हुई और अनियमित फलियां। (यह फली छेदक द्वारा होने वाले नुकसान की विशेषता, साफ और गोल छेद के विपरीत है।)

प्रबंधन

- निष्क्रिय प्यूपा को समाप्त करने के लिए 2-3 वर्षों में गहरी ग्रीष्मकालीन जुताई करें।
- शीघ्र बुवाई, कम अवधि वाली किस्में।
- पौधों के बीच कम दूरी रखने से बचें।
- जैविक पक्षी बसेरा के रूप में उपयोग हेतु तुलनात्मक फसल के रूप में लंबी ज्वार उगाएं।
- जहां तक संभव हो लार्वा और वयस्कों को इकट्ठा करें और नष्ट करें।
- प्रत्येक कीट के लिए 50 मीटर की दूरी पर 5 जाल प्रति हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें।
- 50/हेक्टेयर की दर से पक्षी बसेरा स्थापित करें।
- पतंगों की आबादी को नष्ट करने के लिए प्रकाश जाल (1 प्रकाश जाल/5 एकड़) की स्थापना।
- नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा क्लियोनिस को साप्ताहिक अंतराल पर 1.5 लाख/ हेक्टेयर/ सप्ताह की दर से चार बार छोड़ा जाता है।
- हरे लेसविंग, शिकारी बदबूदार कीड़े, मकड़ी, चींटियों का संरक्षण करें ।
- फूल आने की अवस्था से शुरू होकर 10-15 दिनों के अंतराल पर तीन बार 0.1% टीपोल और 0.5% गुड़ के साथ 250 लीटर/हेक्टेयर एनपीवी का प्रयोग करें।

(नोट- कीटनाशक प्रति हेक्टेयर एनपीवी का छिड़काव तब करें जब लार्वा प्रारंभिक अवस्था में हों)।

- एनएसकेई 5% का दो बार छिड़काव करें।
- प्रभावित भाग होने पर रासायनिक नियंत्रण हेतु क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल18.5 एस.ई. 150 मिली./हेक्टेयर।

हेयरी केटरपीलर

क्षति: प्रारंभिक अवस्था में लार्वा ज्यादातर पत्तियों की निचली सतह पर क्लोरोफिल पर झुंड में आक्रमण करते हैं, जिसके कारण पत्तियां भूरे-पीले रंग की दिखती हैं। बाद की अवस्थाओं में लार्वा पत्तियों को किनारे से खाते हैं। पौधे की पत्तियाँ जाल या जाल जैसी दिखाई देती हैं।

प्रबंधन

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- मानसून पूर्व बुवाई न करे।
- अनुशंसित मात्रा मे बीज का उपयोग करे एवं उचित दूरी पर बुवाई करें।
- पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए।
- सोयाबीन की अंतरफसल या तो (शीघ्र पकने वाली) अरहर की किस्म या मक्का या ज्वार के साथ 4:2 के क्रम में की जानी चाहिए।
- संक्रमित पौधों के भागों, अण्डों और युवा लार्वा को एकत्रित कर नष्ट कर दें।

खेत की सफाई: संक्रमित पौधों के हिस्सों को कम से कम 10 दिनों में एक बार हटा दें और उन्हें खाद के गड्ढे में दबा दें ताकि उनकी संख्या पर नजर रखी जा सके और उन्हें कम किया जा सके।

प्रकाश जाल: कुछ रात्रिचर कीटों जैसे कि रोयेंदार इल्ली (सकारात्मक प्रकाशानुवर्ती) के वयस्कों को पकड़ने के लिए प्रति हेक्टेयर एक प्रकाश जाल (200 मर्करी वेपर लैंप) स्थापित करें।

- जब इल्लियों की संख्या 10ध्मी पंक्ति लंबाई (ई.टी.एल.) तक पहुंचने की संभावना होती है तब एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर का प्रथम छिड़काव 40 से 45 दिन पर एवं दूसरा छिड़काव 10 से 15 दिन के अंतराल पर क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.ई 150 मिली. प्रति हेक्टेयर फली अवस्था पर करें।

साप्ताहिक सुविचार

अत्यधिक दुलार से पुत्र का और अविद्या से ब्राह्मण का नाश होता है। – विदुर

पौध संरक्षण के प्रति जागरुकता अत्यधिक आवश्यक

कृषक दूत सम्पादकीय

एक सर्वेक्षण के मुताबिक हर वर्ष देश में 35 प्रतिशत फसलों का नुकसान पौध-संरक्षण के प्रति लापरवाही के कारण होता है। कहने का तात्पर्य स्पष्ट है कि यदि किसान भाई फसलों में कीट-व्याधियों की रोकथाम कर लें तो इतने बड़े फसल नुकसान को बचाया जा सकता है। फसल संरक्षण के प्रति किसानों की लापरवाही जग-जाहिर है। मात्र 8 से 10 प्रतिशत किसान पौध संरक्षण के प्रति जागरुक पाये गये हैं। शेष किसानों को फसलों के संरक्षण से कोई लेना-देना नहीं है।

पौध संरक्षण फसल कृषि कार्यमाला के तहत अत्यधिक जरूरी कृषि कार्य है। हर वर्ष करोड़ों रुपये की फसल कीट-व्याधि चट कर जाते हैं। फसल की बुवाई से लेकर कटाई एवं गहाई तक कीट-रोगों का आक्रमण रहता है। इसके प्रति किसानों का सचेत रहना बहुत जरूरी है। वर्तमान में किसानों द्वारा रासायनिक एवं जैविक दोनों विधियों से फसलों का संरक्षण किया जाता है। इसमें सबसे सुरक्षित जैविक विधि है लेकिन इसे अपनाने वाले किसानों की संख्या कम है। रासायनिक विधियों के माध्यम से अधिकतर किसान कीट-रोगों की रोकथाम करते हैं। फसल संरक्षण में उपयोग की जाने वाली रासायनिक विधियां अधिक सुरक्षित नहीं है। इससे पर्यावरण एवं मानव, पशु पक्षी सभी के लिये खतरा है।

फसल संरक्षण के नाम पर हर वर्ष किसानों के साथ ठगी के मामले प्रकाश में आते हैं। जहां किसानों को नकली एवं अमानक कीटनाशक ऊंची कीमत पर किसानों को बेचे जाते हैं। कई बार तो इन अमानक कीटनाशकों से खेत में खड़ी फसल भी तबाह हो जाती है। किसान सिर्फ अपनी नियति पर आंसू बहाता नजर आता है।

फसल संरक्षण के मामले में किसानों को जागरुक करने की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके लिये कृषक प्रशिक्षण के माध्यम से पौध-संरक्षण की उपयोगिता बतायी जानी चाहिए। रासायनिक कीटनाशकों के सीमित उपयोग की सलाह किसानों को देना चाहिए। कुकरमुत्ते की तरह फैली हुई जैविक कंपनियों की जांच होनी चाहिए। ये तथा कथित जैविक कंपनियां रासायनिक कीटनाशक मिलाकर खुलेआम गोरखधंधा कर रही हैं। इन्हें भी जांच की श्रेणी में रखने की जरूरत है। जो कंपनियां किसान विरोधी कृत्य में संलिप्त पायी जाएं उन्हें तत्काल प्रतिबंधित करके आपराधिक प्रकरण कायम करना चाहिए। कृषि विभाग का मैदानी कार्यकर्ता एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के तकनीकी कार्यकर्ता इसमें अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं। फसलों का प्रभावी ढंग से संरक्षण करके करोड़ों रुपये के नष्ट होने वाले अनाज को हम बचा सकते हैं। फसल संरक्षण के लिये हमें प्राकृतिक एवं जैविक विधियों का अधिक से अधिक सहारा लेने की जरूरत है ताकि किसानों की उत्पादन लागत भी कम की जा सके।

जेयू एग्री साइंसेस के आधुनिक पेटेंटेड उत्पादों से करें फसलों की अनेकों समस्या का समाधान

इंदौर। देश की प्रसिद्ध कम्पनी जेयू एग्री साइंसेस प्रा.लि. ने आधुनिक पेटेंटेड उत्पाद अयाका, निंजीत्सु, एजोलेन और ट्रिसटॉन बाजार में उपलब्ध करवाये हैं। ये सभी उत्पाद नयी तकनीक पर आधारित है, जो फसलों को अनेक प्रकोप से सुरक्षित रखता है।

अयाका नवीन अनुसंधान पर आधारित तीन कॉन्बिनेशन प्रोडक्ट है और इसके कॉन्बिनेशन आपस में मिलकर सिनर्जिस्टिक प्रभाव के कारण चार-गुना असर दिखाते हैं। अयाका की Quadforce की अनोखी तकनीक इसे अन्य उत्पादों से अलग और अधिक असरदार बनाती है। अयाका स्पर्शजनित और पेट के जहर के माध्यम से इल्ली कीटों में प्रवेश करता है और एक से अधिक तरीकों से इल्लियों के नर्वस सिस्टम पर अटैक करता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण, अयाका के प्रयोग से इल्लियों पर प्रभावशाली नियंत्रण मिलता है। साथ ही अयाका में है क्विक-एक्शन फॉर्मूला, जिसके प्रयोग के 24 -48 घंटों में असर दिखना शुरू हो जाता है। अयाका इल्लियों के जीवन चक्र को बाधित कर देता है, जिससे लंबे समय तक इल्लियों पर नियंत्रण मिलता है। किसानों के लिए अपनी फसल को सुरक्षित रखने और अधिक से अधिक उत्पादन पाने के लिए अयाका निश्चित रूप से मददगार साबित हो रहा है। अयाका का प्रयोग छिड़काव/स्प्रे के माध्यम से किया जा सकता है। अयाका का प्रयोग 300 मि.ली प्रति एकड़ की अनुशंसित मात्रा में 200 लीटर पानी के घोल में मिलाकर किया जाना चाहिए।

एजोलेन एक आधुनिक और शोध-आधारित उत्पाद है जिसमें तीन प्रभावी संयोजन हैं- एजोक्सीस्ट्रोबिन 7.5 प्रतिशत, टेबुकोनाजोल 12 प्रतिशत और आइसोप्रोथियोलेन 12 प्रतिशत एसई। यह एक सिस्टेमिक और ट्रांसलैमिनार फफूंदनाशक है, जो फसलों में फफूंद से लड़ने के लिए व्यापक स्पेक्ट्रम नियंत्रण प्रदान करता है। एजोलेन फसल में लगी फफूंद को खत्म करके या उसके फैलाव को रोककर लंबे समय तक सुरक्षा देता है, जिससे फसल की पैदावार और गुणवत्ता में सुधार होता है। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण, एजोलेन के उपयोग का असर 24 से 48 घंटों के भीतर दिखना शुरू हो जाता है। यह किसानों को उनकी फसल को सुरक्षित रखने और अधिक उत्पादन प्राप्त करने में निश्चित रूप से मददगार साबित हो रहा है। एजोलेन का प्रयोग छिड़काव के माध्यम से किया जाना चाहिए। इसकी अनुशंसित मात्रा 300 मिलीलीटर प्रति एकड़ है, जिसे 200 लीटर पानी के घोल में मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिए।

निंजीत्सु एक आधुनिक और शोध-आधारित उत्पाद है जिसमें तीन शक्तिशाली तत्व शामिल हैं: थियामेथोक्सम 1.25 प्रतिशत, फिप्रोनिल 1.25 प्रतिशत, और क्लोरएंट्रानिलिप्रोले 0.6 प्रतिशत जीआर। यह अनूठा संयोजन सिस्टेमिक, स्पर्श और पेट के जहर के माध्यम से कीटों पर कई तरह से काम करता है, उनके तंत्रिका तंत्र और मांसपेशियों पर हमला करता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण, निंजीत्सु कीटों पर प्रभावशाली और लंबे समय तक नियंत्रण प्रदान करता है, जिससे फसल की पैदावार और गुणवत्ता में सुधार होता है। इसका असर 24 से 48 घंटों के भीतर दिखना शुरू हो जाता है। अपनी फसल को सुरक्षित रखने और अधिक उत्पादन पाने की चाहत रखने वाले किसानों के लिए, निंजीत्सु निश्चित रूप से एक सहायक साबित हो रहा है। निंजीत्सु का प्रयोग छिड़काव के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसकी अनुशंसित मात्रा 2 किलो प्रति एकड़ है।

ट्रिसटॉन (Triston) एक आधुनिक और शोध-आधारित उत्पाद है जिसमें तीन शक्तिशाली तत्व शामिल हैं- डाइनोटेफ्यूरॉन 12 प्रतिशत, थियामेथोक्सम 22.5 प्रतिशत, और पाइमेट्रोजिन 30 प्रतिशत, डब्ल्यूजी। इसकी "TriTech Power" नामक अनोखी तकनीक इसे दूसरे उत्पादों से बेहतर और ज्यादा असरदार बनाती है।

यह संयोजन सिस्टेमिक, स्पर्शजनित और ट्रांसलमिनार तरीकों से कीटों में प्रवेश करता है, जिससे यह उनके नर्वस सिस्टम और मांसपेशियों पर कई तरह से हमला करता है। इन्हीं खासियतों की वजह से, ट्रिसटॉन के इस्तेमाल से फुदका कीटों पर असरदार और लंबे समय तक नियंत्रण मिलता है। इसका सीधा फायदा फसल की पैदावार और गुणवत्ता में सुधार के रूप में दिखता है। ट्रिसटॉन का उपयोग स्प्रे के माध्यम से किया जाता है। इसकी अनुशंसित मात्रा 140 ग्राम प्रति एकड़ है, जिसे 200 लीटर पानी के घोल में मिलाकर इस्तेमाल करना चाहिए।

मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण प्रशिक्षण

धार। कृषि विज्ञान केन्द्र, धार द्वारा उद्यमिता विकास हेतु मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण प्रशिक्षण का आयोजन केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान के मार्गदर्शन में किया गया। उन्होंने कहा कि वे युवक जो पढ़े-लिखे हैं एवं जिनके पास जमीन नहीं है, ऐसे लोग अगर खेती करना चाहते हैं तो उनके लिए मशरूम उत्पादन खेती एक लाभदायक खेती साबित होगी और वो अपनी आय उपार्जन कर सकते हैं। केंद्र की प्रसार वैज्ञानिक अंकिता पाण्डेय द्वारा मशरूम उत्पादन की विभिन्न तकनीकी की जानकारी दी। साथ ही विभिन्न प्रकार के मशरूम जैसे बटन, पैडी स्ट्रॉ, आयस्टर,मिल्की आदि मशरूम की विभिन्न प्रजातियों एवं इनको उगाने के लिए उपयुक्त समय व तापमान का प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक रूप से प्रशिक्षण दिया। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. मंडलोई ने मशरूम की खेती को वैज्ञानिक तरीके से करने के उपाय बताया। कृषि महाविद्यालय, इन्दौर के वैज्ञानिक डॉ. आर.के. सिंह ने किसानों को स्पान बनाने की विधि बताई।

अनमोल वचन

मानव जिस लक्ष्य में मन लगा देता है, उसे वह श्रम से हासिल कर सकता है। – ऋग्वेद

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

भाद्रपद कृष्ण/शुक्ल पक्ष विक्रम संवत 2082 ईस्वी सन् 2025

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
12 अगस्त 25	मंगलवार	भाद्रपद कृष्ण-03	पंतचक
13 अगस्त 25	बुधवार	भाद्रपद कृष्ण-04/5	पंचक
14 अगस्त 25	गुरुवार	भाद्रपद कृष्ण-06	पंचक 11.20 दिन तक
15 अगस्त 25	शुक्रवार	भाद्रपद कृष्ण-07	स्वतंत्रता दिवस
16 अगस्त 25	शनिवार	भाद्रपद कृष्ण-08	श्री कृष्ण जन्माष्टमी
17 अगस्त 25	रविवार	भाद्रपद कृष्ण-09	
18 अगस्त 25	सोमवार	भाद्रपद कृष्ण-10	
19 अगस्त 25	मंगलवार	भाद्रपद कृष्ण-11	जया एकादशी
20 अगस्त 25	बुधवार	भाद्रपद कृष्ण-12	
21 अगस्त 25	गुरुवार	भाद्रपद कृष्ण-13	
22 अगस्त 25	शुक्रवार	भाद्रपद कृष्ण-14	
23 अगस्त 25	शनिवार	भाद्रपद कृष्ण-30	स्नानदान अमावस्या
24 अगस्त 25	रविवार	भाद्रपद शुक्ल-01	
25 अगस्त 25	सोमवार	भाद्रपद शुक्ल-02	

- डॉ. पी.एल. अम्बुलकर
- श्वेता मसराम
- डॉ. गीता सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)

धान को बचायें कीटों से

मध्यप्रदेश में गेहूं के बाद धान दूसरी प्रमुख अनाज फसल है। मध्यप्रदेश के प्रमुख धान उत्पादक क्षेत्रों में रीवा संभाग व सीधी जिला तथा जबलपुर, मण्डला एवं बालाघाट जिला प्रमुख हैं। खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली धान की फसल पर कीट-व्याधि की समस्या अनुकूल मौसम के कारण अधिक होती है। धान की फसल पर रोपा अवस्था से लेकर फसल पकने तक अनेक प्रकार के कीटों का आक्रमण होता है।

सफेद पृष्ठ फुदका

पहचान चिन्ह: ये फुजके पीठ वाले छोटे आकार के कीट होते हैं। इनका रंग स्लेटी होता है। वयस्क फुदकों की पीठ पर काली धारी होती है। इसका सिर सूंड की भांति आगे निकला होता तथा पैरों पर कम संख्या में रोम होते हैं। पंख की शिरायें गहरे रंग की होती हैं।

क्षति के लक्षण: इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही हानि पहुंचाते हैं। प्रकोपित फसल की पत्तियां पीली होने लगती हैं तथा अग्र सिरे से सूखना आरंभ करती है। अधिक प्रकोपित होने पर फसल पकने की अवस्था पर फुदका-जलन के लक्षण भी दिखाई देते हैं।

हरा फुदका

पहचान चिन्ह: वयस्क फुदके लगभग 5 मिमी लम्बे हरे चमकदार होते हैं। इनके अग्र पंखों पर काले रंग के स्पष्ट धब्बे होते हैं। इन कीटों का सिर उल्टे वाय आकार का होता है। पैरों पर कांटेदार रोम पाये जाते हैं। शिशु सफेद रंग के हो जाते हैं।

क्षति के लक्षण: इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही पौधों से रस चूसकर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से हानि पहुँचाते हैं ये कीट धान की फसल में टुंगरु वायरस रोग के वाहक होते हैं। अधिक प्रकोप के कारण पत्तियां पीली पड़कर मुरझा जाती हैं।

भूरा फुदका

पहचान चिन्ह: कीट हल्के भूरे रंग का होता है तथा इसकी लंबाई 30 मिमी होती है। इस कीट का नर लगभग 2.5 मिमी लंबा होता है।

क्षति के लक्षण: यह कीट धान के पौधे की पत्तियों एवं तने से रस चूसकर फ्लोयम एवं जायलम से को बंद कर देता है। तने के बीच पिथ को भी क्षति पहुंचाता है फलस्वरुप पत्तियां सुखी हुयी तथा भूरे रंग की हो जाती हैं। इस अवस्था को फुदक झुलस कहते है । प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते हैं जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं। यदि इसका आक्रमण पौधे की प्रारंभिक अवस्था में होता है तो पौधों मे किल्ले नही निकलने पाते हैं तथा यदि पुष्प गुच्छ निकलने के बाद आक्रमण होता है तो अधिकांश बालों में दाने नहीं बनते। कीट गर्म वातावरण तथा अधिक आर्द्रता की दशाओं में अधिक सक्रिय रहता है। धान का खेत कटने के पश्चात यह घास एवं खरपतवारों पर जीवन निर्वाह करता है।

धान का गंधी बग

पहचान चिन्ह: अंडे से निकले शिशु हरे रंग के पतले शरीर वाले होते हैं। वयस्क मत्कुण के शरीर का रंग पीलापन लिये हरा होता है जो कि बाद में भूरा हो जाता है। शरीर पतला लगभग 16 मिमी लम्बा तथा सिर के निचले तल पर 4 खण्डीय चोंच पर गंध ग्रंथियां होती हैं जिनसे एक विशेष प्रकार की गंध निकलती है। इसीलिये इसे गंधी बग कहते हैं। अग्र जोड़ी पंखों का आधा अग्र भाग चमकीला और पिछला भाग झिल्ली जैसा होता है। इस कीट की टांगें काफी लंबी होती हैं।

क्षति के लक्षण: इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही अपने चुसने एवं चुभाने वाले मुखांगों से कोमल पत्तियों, तनों तथा दूधिया अवस्था में धान की बालियों का रस चूसकर हानि करते हैं। प्रकोपित पौधों की पत्तियां पीली पड़कर कमजोर हो जाती हैं। पत्तियों पर कवक का प्रकोप हो जाने से उनमें भरे काले धब्बे पड़ जाते हैं। ग्रसित बालियों के दाने खोखले तथा हल्के हो जाते हैं और छिलकों का रंग सफेद हो जाता है। जिस स्थान से यह रस चूसता है वहां पर काला या भूरा निशान पड़ जाता है। कीट मार्च से नवम्बर तक सक्रिय रहते हैं।

गंगई मक्खी या गाल मिज

पहचान चिन्ह: वयस्क मक्खी मच्छर के समान दिखाई देती है। इसका शरीर कोमल, टांगें पतली लम्बी तथा पंख रोयेंदार होते हैं। नर का रंग काला तथा मादा के उदर का रंग चमकीला लाल होता है।

क्षति के लक्षण: इस कीट की इल्ली अवस्था जिसे मैगट कहते हैं, हानिकारक होती है। मैगट पौधों के तनों के आंतरिक भाग को काटकर खाती है जिससे तना खोखला हो जाता है। ग्रसित पौधों में दैहिकीय परिवर्तन होने के कारण पौधे की बढ़वार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा पौधों की मध्य पत्ती के आधारीय भाग में या कल्लों में गांठ बाद में खोखली होकर चांदी जैसे सफेद रंग की हो जाती है फलस्वरुप रजत पोई या सिल्वर शूट बनाता है। ग्रसित पौधे सूख जाते हैं तथा उनमें बाली नहीं बनती। यह कीट मई से सितम्बर तक सक्रिय रहता है।

आर्मी वार्म

पहचान चिन्ह: वयस्क भूरे रंग का शलभ होता है जिसके शरीर पर बाल तथा धब्बे पाये जाते हैं। अग्र पंखों के बाहरी किनारों पर छाटे-छोटे गहरे रंग के धब्बों की कतार होती है। इल्ली सक्रिय तथा मटमैले रंग की होती है जो बाद में हरे रंग की हो जाती है। इसका सिर लाल तथा शरीर पर लम्बी धरियाँ होती हैं। इल्ली हल्का सा स्पर्श पाते ही सिकुड़कर गोल हो जाती है।

क्षति के लक्षण: इस कीट की सूंडी अवस्था ही हानिकरक होती है। नव विकसित सूंडी धान की पत्तियां खाती है तथा उसमें केवल मोटी शिरायें ही बचती हैं। सूंडी की चतुर्थ एवं पंचम अवस्था सबसे अधिक हानि करती है। बाली निकलने की अवस्था में यह सबसे अधिक हानि करती है। इस अवस्था में यह तने से बाली को काटकर खाती है। अत: इसे इयरहेड कटिंग केटरपिलर भी कहा जाता है। इसकी सूंडियां धान के पौधों के कल्लों के पास दिन के समय छिपी रहती हैं तथा रात्रि के समय सक्रिय रहकर हानि करती है। ये सूंडियाँ एक खेत से दूसरे खेत में एक साथ चलकर पहुँचती हैं इसलिये इसे फौजी कीट या आर्मी वार्म कहते है।

तना छेदक

पहचान चिन्ह: वयस्क का रंग पीला, सफेद होता है। मादा कीट के अग्र पंख संतरे रंग के होते हैं तथा प्रत्येक पंख पर मध्य मे छोटा काले रंग का धब्बा होता है। पूर्ण विकसित इल्ली कोमल तथा गुलाबी रंग की होती है।

क्षति के लक्षण: प्रारंभ में इल्ली पत्तियों की सतह को हानि करती है तथा बाद में यह तने पर एक छोटा छिद्र बनाकर कोमल भागों को हानि पहुँचाती है जिससे डेड हर्ट बन जाता है। इसे खींचने पर यह आसानी से खींच जाता है। प्रभावित बालियाँ सफेद हो जाती है जिसमें दाने नही बनते।

समन्वित कीट प्रबंधन के उपाय

सस्य क्रियाओं द्वारा

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई: ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई, मेढ़ों की सफाई तथा पिछली फसल के अवशेषों को नष्ट करें।

बुवाई/रोपाई का समय: शीघ्र एवं उचित समय पर बुवाई/रोपाई करना आवश्यक है। नर्सरी में बीजों की बुवाई जून तथा रोपाई जुलाई माह तक पूर्ण कर लेने पर नाशी कीटों का प्रकोप कम किया जा सकता हैं।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

- **डॉ. शुभम मिश्रा**
  फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
- **डॉ. के.एन. गुप्ता**
  वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक
  ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर (म.प्र.)
- **डॉ. ए.के. भारद्वाज**
  हेड, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
- **डॉ. स्मिता राजन**
  फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
  उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

तिल की फसल को रोगों से बचायें

तिल की खेती प्रमुख तिलहन फसल के रूप में की जाती है। खरीफ की तिलहनी फसल होने के कारण तिल में कई तरह के रोग लगते हैं जो उत्पादन प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत है तिल का रोग प्रबंधन।

फाइलोडी रोग/पर्णताभ रोग : यह रोग फाइटोप्लाज्मा द्वारा होता है एवं इसका संचरण ओरोसियस आरिएन्अेलीस नामक रोगवाहक कीट द्वारा फैलता है।

लक्षण : रोगग्रसित पौधों में सकरी छोटी पत्तियोंयुक्त, झाड़ीनुमा, संरचना वाले होते हैं। इस रोग से ग्रसित पौधों में बीज का निर्माण नहीं होता है।

प्रबंधन

- रोग रोधी प्रजातियों का उपयोग करें।
- कुछ खास तरीके जैसे फसल चक्र प्रबंधन, बुवाई का समय, कीटों की उपस्थिति का संज्ञान की गंभीरता को प्रभावित करता है।
- इस रोग के उपचार के लिये बुवाई के 30-40 और 60 दिन बाद इमिडाक्लोरप्रिड़ 17.8 एस.एल 3 मिली दवा को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नीम तेल (5 मिली लीटर प्रति लीटर) का खड़ी फसल में छिड़काव करें।

तना एवं जड़ सड़न : यह रोग मैक्सेफोमिना नामक फफूंद से होता है।

लक्षण : इस रोग से रोगग्रस्त पौधों की जड़ें व तना भूरे रंग के हो जाते हैं तथा रोगी पौधों को ध्यान से देखने पर तना, शाखाओं, पत्तियों एवं फलियों पर छोटे-छोटे काले दाने दिखाई देते हैं। रोगी पौधे जल्दी पक जाते हैं तथा दाने अपरिपक्व रह जाते हैं। यह रोग फसल पकने की अवधि तक कभी भी हो सकता है।

प्रबंधन

- टी.के.जी. 308, एम-2, एम-4, एम-9, एमएम-26 जैसी किस्म का प्रयोग करें।
- खेत में जल निकासी का उचित प्रबंधन करना चाहिये।
- रोगग्रसित पेड़ की छाल को चाकू से हटा लें और इसके स्थान पर बोर्डेक्स पेस्ट लगायें।
- ट्राइकोडर्मा 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से 10 क्विंटल गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई पूर्व भूमि में देना प्रभावी पाया गया है।
- सरसों की खली का उपयोग करें।
- प्रभावित पौधे को टेबोकोनाजोल+ट्राइफोक्सी स्ट्रोबिन 0.1 प्रतिशत का पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

सर्कोस्फोरा पत्ती धब्बा अंगमारी : यह रोग सर्कोस्फोरा सिसेमी नामक फफूंद के कारण होता है।

लक्षण : इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियों पर आई के समान धब्बे बनते हैं।

प्रबंधन

- बिजाई से पहले फफूंदनाशी से अवश्य उपचार करें जैसे थिओफेनेट मिथाइल 45 प्रतिशत+पाइरेक्लोस्ट्रोबिन 5 प्रतिशत को 20 से 25 मिली प्रति 10 किग्रा बीज से उपचारित करें।
- साफ-सुथरी खेती करें।
- इस रोग के उपचार के लिये कार्बेन्डाजिम+मैन्कोजेब 2.5 ग्राम दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव रोग प्रारंभ होने पर 15 दिन के अन्तर से 2 बार करें।

अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा : यह रोग अल्टनेरिया सिसेमी नामक फफूंद से होता है।

लक्षण : रोग की शुरुआत में पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के तारेनुमा धब्बे बनते हैं। रोग की तीव्रता अधिक होने पर पूरे पौधे में गहरे रंग के धब्बे बनते हैं।

प्रबंधन

- साफ स्वच्छ खेती करें।
- फसल के पूर्व अवशेष नष्ट करें।
- अन्तरसस्य क्रियाओं द्वारा नियंत्रण करें।
- अनुमोदित समय पर बोनी करें।
- निचले इलाकों में और बाढ़ वाले इलाके में न उगाए।
- रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़कर फेंक दे।
- सिंचाई समय पर करें।
- जे.टी.एस. 8 अनुशंसित किस्म का प्रयोग करें।
- इसके उपचार के लिये प्रोपीकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) या कार्बेन्डाजिम+मैन्कोजेब (0.25 प्रतिशत) का घोल बनाकर छिड़काव रोग प्रारंभ होने पर 15 दिन के अन्तर से 2 बार करें।

भभूतिया रोग : यह रोग ईरीसईफी सिसेमी नामक फफूंद के द्वारा होता है।

लक्षण : यह रोग सितम्बर माह के आरम्भ में पत्तियों की सतह पर सफेद चूर्ण के रूप में जम जाती है। ज्यादा प्रकोप होने पर पत्तियां पीली पड़कर सूखने से झड़ जाती हैं। पौधों की वृद्धि ठीक से नहीं हो पाती।

प्रबंधन

- बीजों को मेटालेक्सिल (अप्रोन एस.डी.) 6 ग्राम या ट्राइकोड्रर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करें।
- रोग की प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें।
- बेहतर वायु संचार के लिये पौधों के बीच में पर्याप्त जगह छोड़कर फसलों का रोपण करें।
- पहला धब्बा दिखाई देने पर संक्रमित पत्तियों को हटा दें।
- गैर संवेदनशील फसलों के साथ चक्रीकरण अपनाएं।
- अत्याधिक संक्रमण को रोकने के लिये सल्फर, पत्तियों पर नीम तेल का छिड़काव करें।
- इस रोग के उपचार हेतु घुलनशील गंधक 3 ग्राम या थिओफेनेट मिथाइल 45 प्रतिशत+पाइरेक्लोस्ट्रोबिन 5 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव बीमारी शुरू होने पर 7 दिन के अंतर से 2-3 बार करें।

फाइटोफ्थोरा अंगमारी : यह रोग फाइटोफ्थोरा निकोटियाने नामक फफूंद के कारण होता है।

लक्षण : रोग की शुरुआत में पत्तियों पर भूरे रंग के शुष्क छोटे धब्बे बनते हैं। जो बाद में बड़े होकर पत्तियों को झुलसा देते हैं। तने पर इसका प्रकोप भूरी धारियों के रूप में दिखाई देता है। अधिक प्रकोप होने पर हानि शत-प्रतिशत हो सकती है।

प्रबंधन

- अच्छी जल निकास वाली जमीन का चयन करें।
- जवाहर तिल 306, जे.टी.एस.8, टी.के.जी. 55 जैसी किस्मों का प्रयोग करें।
- रोगग्रस्त भाग को चाकू से छिलकर बोर्डेक्स पेस्ट लगायें।
- रोग के लक्षण दिखने पर रिडोमिल एम.जेड 2.0 ग्राम, कवच 2.5 ग्राम या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर खड़ी फसल में 15 दिन के अंतर से तीन बार छिड़काव करें।
- ट्राइकोडर्मा विरडी (5 ग्राम प्रति किलोग्राम) द्वारा बीजोपचार करें।

मक्के की फसल में फाल आर्मी वर्म का प्रबंधन

- **आर.डी. बारपेटे** (वैज्ञानिक)
- **डॉ. संजीव वर्मा** (वैज्ञानिक)
- **मेघा दुबे** (वैज्ञानिक)
- **नेपाल बारस्कर** (कार्यक्रम सहायक)

कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल (म.प्र.)

इस कीट का वैज्ञानिक नाम स्पोडोप्टेरा फ्रजीपर्डा है। यह कीट पहली बार 2016 की शुरुआत में मध्य और पश्चिमी अफ्रीका में पाया गया था और कुछ ही दिनों में लगभग पूरे उप-सहारा अफ्रीका में तेजी से फैल गया। मई 2018 में कर्नाटक के शिवगोमा में पाया गया। इसके बाद हसन, बेंगलुरू व चिकबालापुर में देखा गया, वहां से 2019-20 में इस कीट का प्रकोप मध्यप्रदेश में पहली बार देखा गया।

फाल आर्मी वर्म के फैलाव की वजह: जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ संक्रमित और गैर-संक्रमित क्षेत्रों के बीच बढ़ता व्यापार और परिवहन फॉल आर्मी वर्म के फैलाव के कारण हैं, जिसने संभावित रूप से दुनिया की खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है। गर्म और आर्द्र तापमान (20 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच) तथा लंबे व शुष्क समयांतराल फॉल आर्मी वर्म के प्रजनन के लिये अनुकूल कारक हैं।

पोषक पौधे: यह कीट 80 प्रकार की फसलों पर अपना गुजारा कर सकता है प्राय: मक्का, धान, गन्ना, कपास, ज्वार, सोयाबीन आदि फसलों पर ज्यादा तौर पर ये दिखाई देता है, परंतु इसका पसंदीदा भोजन मक्का है।

पहचान के लक्षण: फॉल आर्मी वर्म कीट छोटी से तीसरी अवस्था तक इसके लार्वा को पहचानना मुश्किल है, लेकिन जैसे-जैसे बड़ा होता, इसकी पहचान आसान हो जाती है। इसका लार्वा भूरा, धूसर रंग का होता है, जिसके शरीर के साथ अलग से टयूबरकल दिखता है। इस कीट के पीठ के नीचे तीन पतली सफेद धारियां और सिर पर एक अलग सफेद उल्टा अंग्रेजी शब्द का 'वाई' के आकार का निशान दिखता है। साथ ही लार्वा के 8वें बॉडी सेगमेंट पर 4 बिंदु वर्गाकार आकृति में देखे जा सकते हैं। फॉल आर्मी वर्म कीट के सिर के तरह चार बिंदू होते हैं।

जीवन चक्र

अंडे: भारतीय उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का आर्मी वर्म के अनुकूल होना, जो उन्हें पूरे साल भोजन उपलब्ध कराती है।

एक बार में दो सौ तक अंडे: इसकी वयस्क मादा एक बार में 50 से 200 तक अंडे देती है। यह मादा अपने जीवन काल (7 से 21 दिन) में 10 गुच्छे अंडे यानी 1700 से 2000 तक अंडे दे सकती है। अण्डे गुंबद आकार के होते हैं, जो लगभग 0.4 मिमी. व्यास एवं 0.3 मिमी. ऊंचाई के होते हैं। मादा पत्तियों के नीचे अण्डों को रखना पसंद करती है। ये अंडे 2 से 3 दिन में फूट जाते हैं और इनमें से लार्वा निकलते हैं।

इल्ली: यह अवस्था 14 से 22 दिन की होती है। यह छह अलग-अलग इंस्टारों से गुजरती है। परिपक्व इल्ली की लंबाई लगभग 1.5 से 2 इंच (38 से 51 मिमी.) होती है।

कोकून/शंखी: इल्ली एक शंखी में 8 से 30 दिनों के लिए परिवर्तित होती है। कोकून अवधि पर्यावरण में तापमान पर निर्भर करती है।

वयस्क: वयस्क पतंगे में 32 से 40 मिमी. पंख फैलाव होता है। अगले पंखों के सिर पर भूरे रंग का निशान होता है और पिछला पंख सफेद होता है। एक वयस्क लगभग 10 से 21 दिनों तक जीवित रहता है। एक वयस्क रात में 100 किमी तक एवं अपने जीवनकाल में 2000 किमी तक उड़ सकती है। इस कीट का जीवन चक्र 30 से 61 दिन का होता है। जीवन चक्र गर्मी के दौरान 30 दिनों के भीतर तथा बसंत और शरद ऋतु के मौसम के दौरान 60 दिनों के भीतर पूरा हो जाता है। सर्दियों के दौरान जीवन चक्र 80 से 90 दिनों तक रहता है। एक वर्ष में इनकी पीढ़ियों की संख्या जलवायु के आधार पर भिन्न होती है।

क्षति के लक्षण

पौधों को ऐसे पहुंचाता है नुकसान: छोटी लार्वा पौधों की पत्तियों को खुरचकर खाती है, जिससे पत्तियों पर सफेद धारियां दिखाई देती है। जैसे-जैसे लार्वा बड़ी होती है, पौधों की ऊपरी पत्तियों को खा जाती है और लार्वा बड़ा होने के बाद मक्का के गाले में घुसकर पत्तियां खाती रहती है। पत्तियों पर बड़े गोल-गोल छिद्र एक ही कतार में नजर आते हैं। ये कीट सबसे पहले पौधे की पत्तियों पर हमला करते हैं। इनके हमले के बाद पत्तियां ऐसी दिखाई देती हैं जैसे उन्हें कैंची से काटा गया हो।

ऐसे करें प्रबंधन

मॉनिटरिंग: इस कार्य हेतु स्पोडोप्टेरा फ्रीपर्डा का फेरोमोन ट्रेप 10 प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

कल्चरल विधि

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करके शंखी अवस्था को नष्ट करें।
- समय पर बुआई करें। मानसून वर्षा के साथ ही बुआई करें, विलंब ना करें।
- अनुशंसित पौध अंतरण पर कतार में बुआई करें 75 से.मी. 20 से.मी.।
- संतुलित उर्वरकों का अनुशंसित मात्रा में, विशेषकर नत्रजन की मात्रा का प्रयोग अधिक ना करें (120-140: 60-80: 30)।
- अन्तरवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द लगाए।
- जिन क्षेत्रों में खरीफ की मक्का ली जाती है उन क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन मक्का ना लें तथा अनुशंसित फसल चक्र अपनाएं।
- फसल के आसपास 3 से 4 कतार में ट्रेप फसल जैसे- नेपियर घास लगाएं। फसल को अजेडिरेक्टीन 1500 पी.पी.एम. की दर से छिड़काव करें जिससे कीट के अण्डे फूटने में बाधा निर्माण होती है।
- प्यूपा से वयस्क बनने को रोकने के लिए भूमि में नीम की खली 250 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर डालें।

यांत्रिक विधि

- अंडे के गुच्छे एवं इल्लियों ढूंढ़कर हाथ से इकट्ठा कर नष्ट करें।
- प्रकाश प्रपंच (एक प्रति हेक्टेयर) लगाकर इसके मोथ (तितली) पर नजर रखें।
- प्रारंभिक अवस्था में ग्रसित पौधे में लकड़ी का बुरादा, राख एवं बारीक रेत पौधे की पोंगली में डालें।

जैविक विधि

- अन्तरवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द लगाएं साथ ही सजावटी फूलों के पौधे लगायें जिससे मित्र कीट की संख्या में बढ़ोतरी की जा सकती है।

जैविक कीटनाशक के रूप में बीटी 1 किग्रा प्रति हेक्टेयर अथवा बिवेरिया बेसियाना 1.5 ली प्रति हेक्टेयर का छिड़काव सुबह अथवा शाम के समय करें।

रासायनिक विधि

- लगभग 5 प्रतिशत प्रकोप होने पर रासायनिक कीटनाशक के रूप में फ्लूबेंन्डामाइट 20 डब्ल्यूडीजी 250 ग्राम प्रति हेक्टेयर।
- इनोसेड 45 एस.सी, 200-250 ग्राम प्रति हेक्टेयर।
- इथीफेनप्रॉक्स 10 ईसी 1 लीटर प्रति हेक्टेयर।
- एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. का 200 ग्राम प्रति हेक्टेयर में कीट प्रकोप की स्थिति अनुसार 15-20 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करें।
- प्रथम छिड़काव बुआई के बाद 15 दिन की अवधि में अवश्य करें।

● संदीप कुमार शर्मा ● डॉ. संजय सिंह
● डॉ. अजय कुमार पांडेय
जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

प्राकृतिक खेती से फसल सुरक्षा

ब्रह्मास्त्र नीम, करंज, सीताफल और धतूरे की पत्तियों को गौमूत्र के साथ मिलाकर बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए 3 किलो नीम की पत्ती, 2 किलो करंज, सीताफल और धतूरे की पत्ती और 10 लीटर गौमूत्र को मिलाकर 20-25 मिनट तक उबाला जाता है।

ब्रह्मास्त्र

ब्रह्मास्त्र फसलों में थ्रिप्स, सफेद मक्खी, माहू, जैसिड, जैसे रस कीटों का प्रकोप अधिक होता है। आकार में छोटे होने के कारण यह बहुत कम समय में फसल को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। इन कीटों से छुटकारा दिलाने के लिए बाजार में कई तरह के कीटनाशक उपलब्ध हैं। लेकिन इनमें मौजूद रसायन खेत की मिट्टी एवं पर्यावरण के बहुत हानिकारक साबित होते हैं। ऐसे में गौ मूत्र एवं अन्य प्राकृतिक उत्पादों से तैयार जैविक कीटनाशक ब्रह्मास्त्र एक बेहतर विकल्प बन कर उभर रहा है।

यह नीम, करंज, सीताफल और धतूरे की पत्तियों को गौमूत्र के साथ मिलाकर बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए 3 किलो नीम की पत्ती, 2 किलो करंज, सीताफल और धतूरे की पत्ती और 10 लीटर गौमूत्र को मिलाकर 20-25 मिनट तक उबाला जाता है। ब्रह्मास्त्र का उपयोग विभिन्न प्रकार के कीटों, जैसे कि छेदक, इल्लियां (कैटरपिलर) और अन्य कीटों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता। यह न केवल कीटों को नियंत्रित करता है, बल्कि फसल की पैदावार भी बढ़ाता है और रोगों से भी बचाता है। ब्रह्मास्त्र का उपयोग करने के लिएए 200 लीटर पानी में 4.5 लीटर ब्रह्मास्त्र मिलाएं और फसल पर छिड़काव करें।

नीमास्त्र

नीमास्त्र एक अकेला ऐसा कीटनाशक जो दिला सकता है आपको कीटों से निजात जैविक तरीके से। नीमास्त्र का प्रयोग रस चूसने वाले कीटों और छोटी सुंडियों के नियंत्रण के लिए किया जाता है। आइये जानें इसे बनाने और प्रयोग करने की विधि।

सामग्री: 5 किलो नीम या टहनियां, 5 किलो नीम फल, 5 लीटर गोमूत्र, 1 किलो गाय का गोबर।

बनाने की विधि

- सबसे पहले प्लास्टिक के बर्तन में 5 किलो कूटी हुई नीम की पत्तियां लें और 5 किलो नीम के फल पीस कर या कूटकर डालें।
- उसके बाद 5 लीटर गोमूत्र और 1 किलो गाय का गोबर डालें।
- इन सभी सामग्री को डंडे से हिलाकर जालीदार कपड़े से ढक दें।
- यह 48 घंटे में तैयार हो जायेगा। 48 घंटे में चार बार डंडे से हिलाएं।

अवधि प्रयोग: नीमास्त्र का प्रयोग 6 महीने तक कर सकते हैं।

सावधानियां

- नीमास्त्र को छांव में रखें और धूप से बचाएं।
- गोमूत्र प्लास्टिक के बर्तन में लें या रखें।

छिड़काव: 100 लीटर पानी में तैयार नीमास्त्र को छान कर मिलायें और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें।

दशपर्णी अर्क

दशपर्णी अर्क जिसे दशपर्णी अर्क भी कहा जाता है। दस प्रकार की पत्तियों से बना एक जैविक पौधा टॉनिक है। यह पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, कीटों से बचाने और विकास में सुधार करने के लिए एक प्राकृतिक समाधान है। यह एक पारंपरिक उपाय है जो पौधों को पोषण देने और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

दशपर्णी अर्क के फायदे

कीट नियंत्रण: दशपर्णी अर्क रस चूसने वाले, तने को कुतरने वाले और अन्य कीटों को नियंत्रित करने में प्रभावी है।

पौधों का स्वास्थ्य: यह पौधों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और उन्हें बीमारियों से बचाता है।

जैविक खेती: यह एक प्राकृतिक और रासायनिक मुक्त समाधान है, जो टिकाऊ खेती के लिए उपयुक्त है।

उपयोग में आसान: इसे पानी में मिलाकर पौधों पर छिड़काव किया जा सकता है।

लागत प्रभावी: यह घर पर आसानी से बनाया जा सकता है, जिससे लागत कम होती है।

दशपर्णी अर्क बनाने की विधि

सामग्री: नीम, करंज, सीताफल, धतूरा, बेल, तुलसी, पपीता, अरण्ड,आक और कनेर के पत्तों का प्रयोग करें।

तैयारी: 200 लीटर पानी में 5-10 किलो पत्तों को कूटकर डालें।

किण्वन: 15-20 दिनों के लिए इसे ढककर रखें। हर दिन हिलाएं।

उपयोग: 5-8 लीटर अर्क को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ भूमि पर छिड़काव करें।

दशपर्णी अर्क का उपयोग

छिड़काव: दशपर्णी अर्क को सुबह या देर शाम को पौधों पर छिड़कें।

मात्रा: 5-8 लीटर अर्क को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ भूमि पर छिड़काव करें।

भंडारण: दशपर्णी अर्क को सीधी धूप से दूर, ठंडी और सूखी जगह पर रखें। दशपर्णी अर्क एक प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल तरीका है पौधों को स्वस्थ रखने और कीटों से बचाने का।

अग्निअस्त्र: अग्निअस्त्र एक 100 प्रतिशत जैविक कीटनाशक है, जिसे पारंपरिक भारतीय विधि से तैयार किया जाता है। यह कीटनाशक, लहसुन, हरी मिर्च, अदरक और प्याज जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से बनाया जाता है और इसका उपयोग सभी प्रकार के कीटों को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है, खासकर जो पौधों या फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं।

प्राकृतिक और सुरक्षित: यह कीटनाशक पूरी तरह से प्राकृतिक है और पर्यावरण के अनुकूल है।

विभिन्न प्रकार के कीड़ों के लिए प्रभावी: यह सफेद मक्खी, पत्ती खाने वाले कीड़े और अन्य हानिकारक कीड़ों को नियंत्रित करने में प्रभावी है।

प्राकृतिक सामग्रियां

▶ अग्निअस्त्र को घर पर ही आसानी से बनाया जा सकता है। ▶ 20 लीटर देशी गाय का गौमूत्र ▶ नीम की पत्तियां 5 किग्रा ▶ तम्बाकू पाउडर 500 ग्राम ▶ 500 ग्राम तीखी हरी मिर्च की चटनी। ▶ 500 ग्राम स्थानीय लहसुन की चटनी।

गोमूत्र में कुचली हुई नीम की पत्तियां और अन्य सामग्री मिलाकर धीमी आंच पर उबाल आने तक पकाएं। मिश्रण को 48 घंटे तक छाया में रखें और सुबह-शाम मिलाते रहें। इसे कपड़े में छान लें और 100 लीटर पानी में 10 लीटर घोल मिलाकर 1 एकड़ फसल पर छिड़काव करें।

फसलों को बचाता है: अग्निअस्त्र फसलों को विषाणुजनित रोगों और संक्रमण से बचाने में भी मदद करता है।

● डॉ. अखिलेश कुमार ● डॉ. स्मिता सिंह
कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

अरहर की फसल में कई तरह के कीट-रोग आक्रमण करते हैं। कीट-रोग के कारण अरहर का उत्पादन प्रभावित होता है। प्रस्तुत आलेख में अरहर के कीट-रोग प्रबंधन का समन्वित उपाय दिया गया है।

अरहर की फसल में समन्वित कीट रोग प्रबंधन का महत्व

दलहनी फसलों में अरहर का विशेष स्थान है।अरहर की दाल में लगभग 20 से 21 प्रतिशत तक प्रोटीन पायी जाती है, साथ ही इस प्रोटीन का पाच्यमूल्य भी अन्य प्रोटीन से अच्छा होता है। शुष्क क्षेत्रों में अरहर किसानों द्वारा प्राथमिकता से बोई जाती है। अरहर की दीर्घकालीन प्रजातिया मृदा में 200 किलोग्राम तक वायुमंण्डलीय नाइट्रोजन का स्थरीकरण कर मृदा उर्वरकता एवं उसादकता में वृद्धि करती है। असिंचित क्षेत्रों में इसकी खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है, क्योंकि गहरी जड़ के एवं अधिक तापक्रम की स्थिति में पत्ती मुड़ने के गुण के कारण यह शुष्क क्षेत्रों में सर्वउपयुक्त फसल है। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक एवं आन्ध्र पदेश देश के प्रमुख अरहर उत्पादक राज्य हैं।

कीट

फली मक्खी: यह फली पर छोटा सा गोल छेद बनाती है। इल्ली (मैगट) अपना जीवनकाल फली के भीतर दानों को खाकर पूरा करती है एवं बाद में प्रौढ़ बनकर बाहर आती है। मादा प्रौढ़ वृद्धिरत फलियों में अंडे रोपण करती है। अंडों से मेगट बाहर आते हैं और दाने को खाने लगते हैं और फली के अंदर ही शंखी में बदल जाती है जिसके कारण दानों का सामान्य विकास रूक जाता है। दानों पर तिरछी सुरंग बन जाती है और दानों का आकार छोटा रह जाता है। शंखी में सेस प्रौढ़ बाहर आती है, जिसके कारण फली पर छोटा सा छेद दिखाई पड़ता है। फली मक्खी तीन सप्ताह में एक जीवन चक्र पूर्ण करती है।

फली छेदक इल्ली: छोटी इल्लियां फलियों के हरे ऊत्तकों को खाती हैं व बडे होने पर कलियों, फूलों, फलियों व बीजों को नुकसान करती है। इल्लियां फलियों पर टेढ़े-मेढ़े आकार के बड़े छेद बनाती है। मादा प्रौढ़ छोटे सफेद रंग के अंडे देती है। इल्लियां पीली, हरी, काली रंग की होती हैं तथा इनके शरीर पर हल्की गहरी पट्टियां होती हैं। शंखी जमीन में रहती है, प्रौढ़ निशाचर होते है जो प्रकाश प्रपंच पर आकर्षित होते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में चार सप्ताह में एक जीवन चक्र पूर्ण करती हैं।

फली का मत्कुण:- मादा प्राय: फलियों पर गुच्छों में अंडे देती है। अंडे कत्थई रंग के होते हैं। इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही फली एवं दानों का रस चूसते हैं, जिससे फली आड़ी-तिरछी हो जाती है एवं दाने सिकुड़ जाते हैं। एक जीवन चक्र लगभग चार सप्ताह में पूरा करते हैं।

प्लूम माथ: इस कीट की इल्ली फली पर छोटा सा गोल छेद बनाती है। प्रकोपित दानों के पास ही इसकी विष्टा देखी जा सकती है। कुछ समय बाद प्रकोपित दाने के आसपास लाल रंग की फफूंद आ जाती है। मादा गहरे रंग के अंडे एक-एक करके कलियों व फली पर देती है। इसकी इल्लियॉ हरी तथा छोटे-छोटे काटों से आच्छादित रहती हैं। इल्लियॉ फलियों पर ही शंखी में परिवर्तित हो जाती है। एक जीवन चक्र लगभग चार सप्ताह में पूरा करती है।

बिलिस्टर ब्रिटल: ये भृंग कलियों, फूलों तथा कोमल फलियों को खाती है। जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। यह कीट अरहर, मूंग, उडद तथा अन्य दलहनी फसलों को नुकसान पहुंचाता है। सुबह-शाम भृंग को पकड़कर नष्ट कर देने से प्रभावी नियंत्रण हो जाता है।

कीट प्रबंधन: कीटों के प्रभावी नियंत्रण हेतु समन्वित संरक्षण प्रणाली अपनाना आवश्यक है।

कृषि कार्य द्वारा

- गर्मी में गहरी जुताई करें ।
- शुद्ध/सतत अरहर न बोयें ।
- फसल चक्र अपनायें ।
- अपने क्षेत्र में उचित प्रतिरोधी किस्मों को लगायें।
- क्षेत्र में एक समय पर बोनी करना चाहिए।
- रासायनिक खाद की अनुशंसित मात्रा ही डालें।
- अरहर में अन्तरवर्तीय फसलें जैसे ज्वार, मक्का, सोयाबीन या मूंगफली को लेना चाहिए।

यांत्रिकी विधि द्वारा

- प्रकाश प्रपंच लगायें।
- फली छेदक कीट की निगरानी के लिए 5 फीरोमोन ट्रेप/हे. का प्रयोग करें।
- पौधों को हिलाकर इल्लियों को गिरायें एवं उनकों इकट्ठा करके नष्ट करें।
- खेत में चिड़ियों के बैठने के लिए अंग्रेजी शब्द ''टी'' के आकार की खुटिया लगायें।

जैविक प्रबंधन

- एच.ए.एन.पी.वी. 500 एल.ई./हे. . यू.वी. रिटारडेन्ट 0.1 प्रतिशत+गुड़ 0.5 प्रतिशत मिश्रण का शाम के समय छिड़काव करें।
- बेसिलस थूरेंजियन्सीस 1 किलोग्राम प्रति हेक्टर+टिनोपाल 0.1 प्रतिशत+गुड़ 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें।

जैव-पौध पदार्थों के छिड़काव द्वारा

- निंबोली सत 5 प्रतिशत का छिड़काव करें ।
- नीम तेल या करंज तेल 10-15 मि.ली.1 मि.ली. चिपचिपा पदार्थ प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- निम्बेसिडिन 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

रासायनिक प्रबंधन

- आवश्यकता पड़ने पर एवं अंतिम हथियार के रूप में ही कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- फली मक्खी एवं फली के मत्कुण के नियंत्रण हेतु सर्वांगीण कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें जैसे- थायोमेथोक्जाम 12.6 लैम्बडासायहलोथिन 9.5 की 250 मिली का 500 लीटर पानी में घोलकर/ हेक्टेयर छिड़काव करें।
- फली बेधक की संख्या आर्थिक क्षति स्तर पर या उससे ऊपर होने पर ही रसायनिक कीटनाशियों का प्रयोग करें। इण्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 500 मि.ली. मात्रा प्रति हेक्टर के दर से 500 लीटर पानी में मिलाकर दो बार प्रथम छिड़काव 50 प्रतिशत फूल एवं फल की अवस्था एवं दूसरा छिड़काव प्रथम छिड़काव के 20 दिन बाद छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार छिड़काव 15 दिन बाद दोबारा करना चाहिएं।
- इस कीट के नियंत्रण हेतु क्लोरेंटाऊनीलीप्रोल+ लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 13.9 प्रतिशत 80 एम. एल. अथवा क्लोरेंट्रानीलीप्रोल 18.5 प्रतिशत 50 एम. एल. अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत 150 एम. एल. प्रति एकड़ की दर से 150 लीटर पानी के साथ प्रभावित फसल पर दोपहर बाद छिड़काव करें।

रोग

उकटा रोग: यह फ्यूजेरियम नामक कवक से फैलता है। रोग के लक्षण साधारणतया फसल में फूल लगने की अवस्था पर दिखाई पड़ते हैं। सितंबर से जनवरी महीनों के बीच में यह रोग देखा जा सकता है।

पौधा पीला होकर सूख जाता है। इसमें जड़ें सड़कर गहरे रंग की हो जाती हैं तथा छाल हटाने पर जड़ से लेकर तने की ऊंचाई तक काले रंग की धारियां पाई जाती हैं। इस बीमारी से बचने के लिए रोगरोधी जातियां जैसे जे.के.एम-189, सी.-11, जे.के.एम-7, बी.एस.एम.आर.-853, 736 आशा आदि बोये। उन्नत जातियों को बीज बीजोपचार करके ही बोयें। गर्मी में गहरी जुताई व अरहर के साथ ज्वार की अंतरवर्तीय फसल लेने से इस रोग का संक्रमण कम रहता है।

बांझपन विषाणु रोग: यह रोग विषाणु (वायरस) से होता है। इसके लक्षण ग्रसित पौधों के उपरी शाखाओं में पत्तियां छोटी, हल्के रंग की तथा अधिक लगती है और फूल- फली नहीं लगती है। यह रोग (माईट) मकड़ी के द्वारा फैलता है। इसकी रोकथाम हेतु रोग रोधी किस्मों को लगाना चाहिए।

खेत में बे-मौसम रोग ग्रसित अरहर के पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। मकड़ी का नियंत्रण करना चाहिए। बांझपन विषाणु रोग रोधी जातियां बोना चाहिए।

फायटोपथोरा झुलसा रोग: रोग ग्रसित पौधा पीला होकर सूख जाता है। इसमें तने पर जमीन के उपर गठान नुमा असीमित वृद्धि दिखाई देती है व पौधा हवा आदि चलने पर यहीं से टूट जाता है। इसकी रोकथाम हेतु उन्नत जातियों को बीजोपचार करके ही बोयें। बुआई रिज पर करना चाहिए और चावल या मूंग की फसल साथ में लगाये। रोग रोधी जाति को बोना चाहिए।

कृषि विभाग द्वारा सोयाबीन फसल के लिये सम सामयिकी सलाह

कीट रोग प्रबंधन के करें उपाय

इंदौर। उप संचालक कृषि सी.एल. केवड़ा ने बताया कि इंदौर जिले के कुछ क्षेत्रों से पौधों के अचानक सूखने की शिकायत आ रही है। ज्यादातर क्षेत्रों में राइजोक्टोनिया एरियल ब्लाइट के लक्षण है। कृषि विभाग द्वारा किसानों को सलाह दी गई है कि इसके नियंत्रण हेतु फफूंदनाशक फ्लुक्सापयोक्साड +पायराक्लोस्ट्रोबिन (300 ग्राम/हे.) या पायरोक्लोस्ट्रोबिन + इपोक्सीबोनाजोल (750 मिली ग्राम/हे.) का छिड़काव करें। एन्थ्रेक्नोज रोग के प्रारंभिक लक्षण भी देखे जा रहे हैं। इसके नियंत्रण के लिये टेबुकोनाजोल 25.9 ईसी (625 मिलीग्राम/हे.) या टेबुकोनाजोल 38.39 एस.सी. (625 मिलीग्राम/हे.) का घोल बनाकर स्प्रे करें। पीला मोजेक के लक्षण दिख रहे हैं तो नियंत्रण हेतु प्रारंभ में खेत से पौधों को निष्कासित करें एवं फ्लोनीकेमिड (200 ग्राम/हे.) और थायोमेथक्स + लैम्बडासायहेलोथ्रिन (125 मिलीग्राम/हे.) अथवा बीटासायफ्लूथिन+ इमिडाक्लोप्रिड (350 मिलीग्राम/हे.) का स्प्रे करें। इससे तना मक्खी का भी नियंत्रण होगा।

सोयाबीन की फसल पर टी आकार के बर्ड पर्चेस लगाएं। इससे कीट भक्षी पक्षियों द्वारा भी इल्लियों की संख्या कम करने में सहायता मिलेगी। मक्का की फसल पर आर्मी वर्म कीटों की रोकथाम हेतु क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 150 एम.एल. प्रति हेक्टेयर का स्प्रे करें एवं सतत निगरानी रखें। सोयाबीन फसल पर सूखे का अंतराल भी जारी है। इस स्थिति में हल्की सिंचाई (बौछारी) करें।

नुकसान को कम करने हेतु एन्टीट्रॉसप्रिरेंट जैसे पौटेशियम नाइट्रेट (1 प्रतिशत) या मैग्नीशियम कार्बोनेट / ग्लिसराल (5 प्रतिशत) अथवा 19:19:19 (1 किलो/एकड़) का छिड़काव किया जायें।

किसानों की विश्वसनीय संस्था कुशवाहा बीज भण्डार

गुणवत्तायुक्त कृषि आदान एक ही छत के नीचे

खटखरी। जिला मऊगंज के अंतर्गत कृषि आदान विक्रेता कुशवाहा बीज भण्डार खटखरी के प्रो. सुरेश कुशवाहा विगत 8 वर्षों से लगातार किसानों की सेवा में समर्पित हैं। श्री कुशवाहा द्वारा उच्च गुणवत्तायुक्त बीज, कीटनाशक, स्प्रे पम्प एवं अन्य कृषि आदानों का विक्रय प्राथमिकता से किया जाता है। श्री कुशवाहा ने बताया कि इस क्षेत्र के एक हजार से अधिक किसानों से सीधा सम्पर्क है। इस संस्था के माध्यम से जो किसान एक बार बीज एवं अन्य आदान लेकर गये हैं वे सभी नियमित ग्राहक बने हैं। कम्पनी के अधिकारियों द्वारा किसानों को उचित सलाह एवं मार्गदर्शन देना अपना दायित्व समझते हैं। श्री कुशवाहा द्वारा उच्च क्वालिटी का सब्जी बीज, धान, चना, गेहूं के अलावा अन्य बीज उच्च गुणवत्ता का उपलब्ध कराया जाता है। समय-सयम पर जैविक खाद का उपयोग करना भी किसानों को बताते हैं।

श्री सुरेश कुशवाहा ने बताया कि वे किसान भाइयों को हमेशा पेस्टीसाइड्स का उपयोग कम करने की सलाह देते हैं। श्री कुशवाहा बताते हैं कि ज्यादा से ज्यादा देशी खाद या जैविक खाद का उपयोग कर फसल उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। कुशवाहा बीज भण्डार का स्थापना का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्र के किसानों को खेती की नवीन तकनीक के प्रति जागरूक करना है। श्री कुशवाहा बताते हैं कि किसानों को बीज एवं अन्य कृषि आदान विक्रय करने के पहले प्रदायक कम्पनी के उत्पाद एवं उसकी कार्यशैली से वे स्वयं संतुष्ट होते हैं। इसके पश्चात ही संबंधित उत्पाद किसानों को खरीदने की सलाह देते हैं।

यदि कभी किसी उत्पाद में गड़बड़ी होती है तो संबंधित कम्पनी एवं प्रदायक तक प्रमुखता से पहुंचाते हैं। कृषि उत्पादों के प्रति किसानों की संतुष्टि से वे खुश होते हैं। श्री कुशवाहा अत्यधिक सहज एवं सरल व्यक्तित्व के धनी है। इनके सुपुत्र बी.एस.सी. (कृषि) स्नातक हैं जो व्यवसाय संचालन में सहयोग करते हैं।

वर्षाकालीन सब्जियों की रोगों से सुरक्षा

● **डॉ. आशीष श्रीवास्तव,** प्राध्यापक
कृषि महाविद्यालय, गंजबासौदा जिला- विदिशा (म.प्र.)

सब्जियों के उत्पादन से किसानों को नियमित आय प्राप्त होती है। इसलिए प्रत्येक किसान को कुछ न कुछ क्षेत्रफल पर सब्जियों की खेती आवश्यक रूप से करना चाहिए। जिस प्रकार किसान भाइयों ने खेती के साथ साथ दुग्ध व्यवसाय को अपनाया है उसी प्रकार सब्जी को व्यवसाय के रूप में अपनाना चाहिए। हमारा देश चीन के बाद सब्जी उत्पादन में दूसरे नंबर पर है। इसके बावजूद इसकी प्रति व्यक्ति उपलब्धता में कमी का प्रमुख कारण पैदावार में बढ़ोतरी न होना है। सब्जियों में अनेकों बीमारियों का प्रकोप होता है जिससे उनकी गुणवत्ता एवं उत्पादन में काफी कमी आ जाती है।

मानव जीवन में सब्जियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। क्योंकि सामान्यत: स्वास्थ्य के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की उपलब्धि एवं विटामिन और खनिज तत्वों की आपूर्ति सब्जियों के माध्यम से ही होती है। सब्जियों की खेती नगदी फसल के रूप में की जाती है, जो हमारे कृषकों की आमदनी का प्रमुख स्रोत ही है। कृषि में परंपरागत फसलों में एक निश्चित समय बाद आमदनी प्राप्त होती है वह भी एक ही बार जबकि रोज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियमित आय होना अत्यंत आवश्यक है। सब्जियों के पौधों को रोगों से बचाने के लिए रोगों की पहचान एवं प्रबंधन के उपायों की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है।

सब्जियों के महत्वपूर्ण रोग

आर्दगलन: यह फफूंदजनित रोग है। इस रोग के प्रकोप से बीज जमीन के नीचे अंकुरण से पहले या अंकुरण के 10 से 15 दिन बाद नर्सरी में पौधा भूमि की सतह के पास से गलकर गिर जाता है। यह रोग छोटे पौधों में अधिक होता है। यह समस्या वर्षा ऋतु में अधिक गम्भीर हो जाती है। रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां पीली होने लगती हैं और कई बार पत्तियों पर सफेद रंग के धब्बे भी उभरने लगते हैं।

प्रबन्धन

- नर्सरी उठी हुई क्यारी पद्धति से तैयार करें। जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो।
- ग्रीष्मकाल में नर्सरी वाले स्थान पर भूमि सौर्यकरण द्वारा भूमि को उपचारित कर लें।
- बीज को बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा विरडी अथवा स्यूडोमोनास से उपचारित करें।
- बीज को बुआई से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू एस नामक फफूंदीनाशक या मेटालेक्सिल व थाइरम (1:1 अनुपात में मिलाकर) 2.5 ग्राम प्रति किलाग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

भभूतिया रोग: इस रोग को चूर्णी फफूंद रोग के नाम से भी जाना जाता है। गर्मी के मौसम में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद चूर्ण के समान धब्बे उभरने लगते हैं। पत्तों और पौधों के दूसरे भागों पर फफूंदी की सफेद आटे जैसी तह जम जाती है। रोग बढ़ने के साथ पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं और पौधों के विकास में बाधा आती है। फल का गुण व स्वाद खराब हो जाता है।

प्रबंधन

- बीज को बुआई से पूर्व ट्राईकोडर्मा बिरडी अथवा स्यूडोमोनास से उपचारित करें।
- बीज को बुआई से पूर्व थाइरम 75 डब्ल्यू एस नामक फफूंदीनाशक 2.5 ग्राम प्रति किलाग्राम बीज की दर से से उपचारित करें।
- 500 ग्राम घुलनशील गंधक (सल्फेक्स या वेटसल्फ) 200 लीटर पानी में प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

कुकड़ा रोग: इस रोग को घुरचा रोग, बंधा रोग, पत्ती मरोड़ रोग, चुरड़ा-मुरड़ा रोग, लीफ कर्ल आदि कई नामों से जाना जाता है। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां ऊपर या नीचे की तरफ मुड़ने लगती हैं। थ्रिप्स के कारण पत्तियां ऊपर की तरफ मुड़ने लगती हैं। माइट के प्रकोप से पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ने लगती हैं। पत्तियां एवं पत्तियों की शिराएं मोटी हो जाती हैं। प्रभावित पौधे झाड़ियों की तरह दिखने लगते हैं। इस विषाणु जनित रोग के कारण पौधों का विकास रुक जाता है और पौधों में फल कम लगते हैं। इस रोग के कारण मिर्च की फसल को बहुत नुकसान होता है।

प्रबंधन

- कुकड़ा रोग के लक्षण दिखने पर पौधों को नष्ट कर दें।
- बीज की बुवाई से पहले खेत की एक बार गहरी जुताई अवश्य करें।
- यदि खेत में रोग से ग्रस्त पौधे हैं तो उन्हें नष्ट कर दें।
- प्रमाणित एवं रोग रहित बीज का चयन करें।
- सफेद मक्खियों से निजात पाने के लिए प्रति लीटर पानी में 5.0 मिलीलीटर नीम का तेल मिलाकर छिड़काव करें।

उकठा रोग: यह एक फफूंदजनित रोग है। यह फफूंद मिट्टी में काफी लंबे समय तक रहते हैं। शुरुआत में पौधों की ऊपरी पत्तियां मुरझाने लगती हैं। इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां नीचे की तरफ झुकने लगती हैं। **(शेष पृष्ठ 16 पर)**

इफको का नीम वृक्षारोपण अभियान

रायसेन। सहकारी संस्था इफको द्वारा जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित रायसेन के सहयोग से रायसेन जिले में वृहद नीम वृक्षारोपण अभियान का आयोजन जुलाई 2025 में किया गया।

इस अभियान के अंतर्गत इफको द्वारा जिले में 7500 नीम पौधों का वृक्षारोपण कराया गया है। कार्यक्रम के अंर्तगत डॉ. छवि कुमार बाघमारे, उपायुक्त सहकारी संस्थाएं, अंजुलि धुर्वे बाघमारे, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित रायसेन, डॉ. डी.के. सोलंकी, राज्य विपणन प्रबन्धक इफको एवं क्षेत्रीय प्रबंधक इफको भोपाल संजीव सिंह सहित जिला सहकारी केंद्रीय बैंक रायसेन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने समिति परिसरों में वृक्षारोपण किया तथा संस्था सदस्य किसानों को भी रोपण के लिए नीम पौधे वितिरित किए गए।

(पृष्ठ 7 का शेष)

धान को बचायें कीटों से .....

रोपों का उपचार: रोपाई से पूर्व रोपों की जड़ों को क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. (200 मिली. दवा 200 लीटर पानी) के घोल में डुबाकर प्रति एकड़ की दर से उपचारित करना चाहिए। स्वस्थ्य बीज प्रतिरोधक जातियो का चुनाव करें।

यांत्रिक विधियों द्वारा

- हानिकारक कीटों के अण्ड समूह एवं इल्लियों को एकत्रित कर नष्ट करें।

पौधों के प्रकोपित भागों को नष्ट करें।

प्रकोपित भाग	हानिकारक कीट
चमकीली प्ररोह पत्तियाँ	गॉल मिज
मृत केन्द्र खोखला सड़ा तना	तना छेदक
ग्रसित पत्तियाँ	हिस्पा, पत्ती मोड़क
अण्ड समूह	तना छेदक

- रोपों की पत्तियों के अग्र सिरे को काटकर अलग कर देवें ।
- प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें।

जैविक क्रियाओं द्वारा : ● स्टेफेलिनिड बीटल,मिरिड बग, ट्राइकोग्रामा कोटेसिया(अण्ड परजीवी), प्लेटीगेस्टर आदि जैविक कीटों का संरक्षण करें। ●धान की तना छेदक इल्लियों के नियंत्रण हेतु ट्राइकोग्रामा जापोनिका अण्ड परजीवी के 50,000 अण्डे प्रति सप्ताह की दर से छः सप्ताह तक रोपाई के 30 दिन बाद से खेत में छोड़ना प्रारंभ करें। ● बिवेरिया बेसियाना 1 लीटर प्रति हे की दर से छिड़काव करें।

रासायनिक कीटनाशकों द्वारा : ●समन्वित नाशी जीव प्रबंधन के अनुसार रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग आवश्यकतानुसार सुरक्षित एवं अंतिम उपाय के रुप में ही करें। पत्ती भक्षक एवं तना छेदक हेतु इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एस. जी. 200 ग्राम प्रति हे. की दर से उपयोग करें। ●रसचूसक कीटों हेतु इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस.एल. 150 मिली./हे. या थायोमिथाक्जाम 25 डब्ल्यू जी. 200 ग्राम/हे. की दर से उपरोक्त में से किसी एक दवा का उपयोग करें।

किसानों की आवश्यकता के अनुसार किये जायें शोध कार्य

ग्वालियर। राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर में अखिल भारतीय समन्वित राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 32वीं वार्षिक समूह बैठक का आयोजन किया गया। यह आयोजन भारतीय राई-सरसों अनुसंधान संस्थान, भरतपुर के नेतृत्व में आयोजित किया गया। जिसमे देश के विभिन्न राज्यों में किये जा रहे राई-सरसों की वार्षिक समीक्षा एवं आगामी वर्षों की कार्य योजना तैयार की जाती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता रा.वि.सिं. कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरविन्द कुमार शुक्ला ने की। मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक, (फसल विज्ञान) डॉ. डी.के. यादव ऑनलाईन मौजूद रहे।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

डॉ. मिश्रा ने संभाला नए अधिष्ठाता का पदभार

नर्मदापुरम। कृषि महाविद्यालय, पवारखेड़ा में नए अधिष्ठाता एवं आंचलिक कृषि अनुसंधान केन्द्र, पवारखेड़ा में सह संचालक अनुसंधान का पदभार डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा ने 31 जुलाई 2025 को ग्रहण किया है। डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा इससे पहले आचार्य एवं विभाग प्रमुख, सस्य विज्ञान के पद पर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर में पदस्थ थे। इस अवसर पर कॉलेज एवं अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक, प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र-छात्रायें उपस्थित रहें। सेवानिवृत्त अधिष्ठाता डॉ. अनिमेष चटर्जी ने नए अधिष्ठाता का स्वागत करते हुए उनके अनुभव और योग्यता की प्रशंसा की। अधिष्ठाता डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा ने कालेज एवं अनुसंधान केन्द्र के उज्जवल भविष्य के लिए प्रतिबद्धता दर्शायी। नए अधिष्ठाता के पदभार संभालने से सभी स्टॉफ, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों में नए उत्साह और ऊर्जा का संचार हुआ है।

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें
Caring Earth for Happiness
अध्यक्ष
सुश्री रेखा कुशवाहा
पता : लोक कल्याण भूमिका समिति
आधारताल-जबलपुर (म.प्र.)

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, बीज, स्प्रे पंप के अलावा कृषकोपयोगी जानकारियां उपलब्ध है।
प्रो. : राजेन्द्र मामोरिया
मो. 9754444004
सनावद रोड, बेड़िया जिला-खरगोन (म.प्र.)

समस्त कृषक बन्धुओं को स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, स्प्रे पंप एवं कृषि संबंधी जानकारियां उपलब्ध हैं।
मे. न्यू राहुल एग्रो एजेंसी
मेन रोड भैरूदा, नसरूल्लागंज
जिला-सीहोर (म.प्र.)
प्रो. राहुल सागर
मो. 9171959521

सागर जिले के समस्त कृषक बंधुओं को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
MASCHIO
अधिकृत विक्रेता
• अत्याधुनिक विराट रोटरी टिलर
• सबसे कम लोड, सबसे ज्यादा काम
प्रो. : राजेश मलैया
मे. मलैया अभिकरण
तिलक गंज, सागर (म.प्र.) फोन-07582-356307

समस्त कृषक बंधुओं को स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
मे. ओम सॉई
कृषि सेवा केन्द्र
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां एवं बीज के अधिकृत विक्रेता
पुलिस थाने के सामने, भैंसदेही, जिला बैतूल (म.प्र.)
प्रो.- हरीश राठौर
मो.: 9425685542

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं
समस्त प्रकार के हाईब्रीड सब्जी बीज के प्रमुख विक्रेता
प्रो. प्रभात पटेल
मो. 9329746811
प्रताप बीज भंडार
शॉप नं. 10, महिला मार्केट, बल्देवबाग, जबलपुर (म.प्र.)

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां बीज एवं स्प्रे पंप के अधिकृत विक्रेता
मे. श्री श्याम कृषि सेवा केन्द्र
मेन रोड- बालागांव, जिला-सीहोर (म.प्र.)
प्रो. धर्मेन्द्र यादव
मो. 9977556509

अन्नदाता का साथ किसान का विकास
अन्नदाता
जिंकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)
सल्फर और जिंक की ताकत
ज्यादा उपज और कम लागत
अन्नदाता जिबो
अन्नदाता जिबो का वादा
मिट्टी जानदार और उपज भी ज्यादा
OSTWAL
ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज
रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-O-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)
उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा) । कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा – सागर)

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाईयां, एवं उन्नत किस्म के बीज के अधिकृत विक्रेता
मे. कुशवाहा बीज भंडार
शाहपुर रोड, खटखरी, जिला-मऊगंज (म.प्र.)
प्रो. सुरेश कुशवाहा
मो. : 9993868871

समस्त किसान भाईयों को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनायें
समस्त प्रकार के कीटनाशक दवाइयां एवं उच्चकोटि के बीज मिलने का एकमात्र स्थान
प्रो. - यशराज सिंह तंवर
मे. रजत कृषि सेवा केन्द्र
बागली रोड, मिसरोद, जिला- भोपाल (म.प्र.)
मो. 9893353468, 8839321614

(पृष्ठ 13 का शेष)

वर्षाकालीन सब्जियों की .....

कुछ समय बाद पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं। समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो पूरा पौधा पीला होकर सूख जाता है। मौसम में होने वाला बदलाव भी इस रोग का प्रमुख कारण है।

प्रबंधन

- फसल चक्र अपनाएं।
- पौधों को लगाने से पहले खेत की एक बार गहरी जुताई करें।
- भूमि शोधन के लिए खेत तैयार करते समय प्रति एकड़ खेत में 40 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में 1.5 से 2.0 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा विरिडी मिला कर प्रयोग करें।
- बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2.0 ग्राम थीरम से उपचारित करें।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण नजर आने पर संक्रमित पौधों को सावधानीपूर्वक खेत से बाहर निकाल कर नष्ट कर दें।
- रोग के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 0.2 प्रतिशत घोल को पौधों की जड़ों में डालें।

एन्थ्रेक्नोज: यह रोग ''कोलेटोट्राईकम केप्सीकाई'' नामक फफूंद से होने वाला अति व्यापक एवं महत्वपूर्ण रोग है। इस रोग से ग्रसित फलों पर छोटे-छोटे काले रंग के धब्बे बन जाते हैं। विकसित पौधों पर शाखाओं का कोमल शीर्ष भाग उपरी से नीचे की ओर सूखना प्रारम्भ हो जाता है।

प्रबंधन

- फसल चक्र अपनायें तथा स्वस्थ व प्रमाणित बीज बोयें।
- रोग की प्रारंम्भिक अवस्था में ताम्रयुक्त फफूंदनाशक दवा का प्रयोग करें।

तना सड़न रोग: इस रोग के होने पर जमीन की सतह से सटे तने मुलायम होने लगते हैं। कुछ समय बाद पौधों का तना सड़ने लगता है। रोग बढ़ने पर पौधे सूख कर गिरने लगते हैं। इस रोग से बचने के लिये मिर्च की नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें।

प्रबंधन

इस रोग से बचने के लिए मिर्च की नर्सरी में जल निकासी की उचित व्यवस्था करें। बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 1.0 ग्राम कार्बेंडाजिम से उपचारित करें। इसके अलावा प्रति लीटर पानी में 2.0 ग्राम केप्टान मिलाकर छिड़काव करें।

सब्जियों में रोगों से बचाव के प्राकृतिक उपाय

- गर्मी की जुताई करें, ताकि खेत के नीचे की मिट्टी को सूर्य की गर्मी प्राप्त हो सके और भूमि के अन्दर पड़े हुए फफूंद सूर्य की तेज धूप में नष्ट हो सके।
- निरोगी फसल एवं अधिक उत्पादन हेतु साफ एवं स्वस्थ बीजों का ही प्रयोग करें।
- खेत में पूर्व फसल के अवशेष एवं डंठल आदि एकत्र कर नष्ट कर दें।
- उचित समय पर बुवाई करें एवं कीट व रोगों के प्रकोप के अनुसार बुवाई समय में परिवर्तन करें।
- एक खेत में हर मौसम एक ही फसल न लगाएं। फसल चक्र अपनाते हुए हर मौसम में बदल-बदल कर फसल लगावें।
- मुख्य फसल के साथ अन्य प्रपंच फसलें लगावें ताकि विभिन्न-विभिन्न कीटों से मुख्य फसल की सुरक्षा हो सके। जैसे- मिर्च के साथ टमाटर लगाने से विषाणु रोग से फसल का बचाव किया जा सकता है।
- पेड़-पौधों को सूखने एवं फफूंदजनित रोगों से बचाव हेतु गाय के ताजे गोबर में दीमक की बॉबी से निकली मिट्टी मिलाकर छिड़काव करें।
- बुवाई से पूर्व नीम की खली, गोबर की सड़ी हुए खाद मिलाकर उपयोग करने से विभिन्न जीवाणु जनित रोगों से फसल की सुरक्षा की जा सकती है।
- ट्राइकोडर्मा फफूंद द्वारा बीजोपचार करने से फसल को विभिन्न फफूंद जनित रोगों से सुरक्षित किया जा सकता है। यदि बुवाई से पूर्व बीजोपचार नहीं किया गया है तो नर्सरी से निकालकर खेत में पौधे लगाये जाने के पूर्व अंकुरित पौधों की जड़ों को ट्राइकोडर्मा फफूंद के चूर्णयुक्त पानी में 20 मिनट तक रखें तत्पश्चात् पौधे खेत में लगायें।

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 08 अगस्त 2024 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	505.0	523.7	-4
अलीराजपुर	713.8	507.0	41
अशोकनगर	1070.0	497.5	115
बड़वानी	293.4	384.5	-24
बैतूल	526.5	607.2	-13
भिंड	610.0	346.1	76
भोपाल	711.5	559.1	27
बुरहानपुर	284.5	417.6	-32
दतिया	653.2	422.3	55
देवास	418.6	526.5	-20
धार	363.2	475.5	-24
गुना	1166.8	552.0	111
ग्वालियर	896.1	387.6	131
हरदा	675.6	631.0	7
इंदौर	280.9	494.0	-43
झाबुआ	547.6	516.5	6
खंडवा	324.6	463.8	-30
खरगोन	301.5	419.3	-28
मंदसौर	495.0	473.9	4
मुरैना	735.9	373.6	97
नर्मदापुरम	894.8	716.8	25
नीमच	644.5	429.2	50
रायसेन	1044.4	622.7	68
राजगढ़	1001.5	516.3	94
रतलाम	569.5	521.8	9
सीहोर	644.5	608.8	6
शाजापुर	365.4	518.7	-30
श्योपुर	1033.7	399.4	159
शिवपुरी	1051.1	468.1	125
उज्जैन	354.5	513.3	-31
विदिशा	787.0	594.9	32
पश्चिमी म.प्र.	657.4	507.2	30
अनूपपुर	692.0	590.5	17
बालाघाट	837.7	736.2	14
छतरपुर	1036.5	517.3	100
छिंदवाड़ा	620.1	583.9	6
दमोह	745.5	640.1	16
डिंडोरी	884.5	705.1	25
जबलपुर	780.4	639.4	22
कटनी	735.7	542.6	36
मंडला	1121.0	704.9	59
नरसिंहपुर	914.3	583.3	57
निवाड़ी	1148.3	408.8	181
पन्ना	875.5	607.4	44
रीवा	776.2	545.4	42
सागर	794.3	630.0	26
सतना	719.0	530.8	35
सिवनी	729.6	612.7	19
शहडोल	714.9	557.1	28
सीधी	931.0	575.1	62
सिंगरौली	833.2	480.8	73
टीकमगढ़	1124.9	541.3	108
उमरिया	835.5	578.5	44
पूर्वी म.प्र.	829.6	599.2	38
म.प्र. योग	732.2	547.2	34

(स्रोत : मौसम विभाग)

आईईएचई की कृषि विस्तार गतिविधियां

आईईएचई में मनायी गई डॉ. स्वामीनाथन की जन्म शताब्दी

भोपाल। उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान (आई ई एच ई), भोपाल में 7 अगस्त 2025 को देश के प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक एवं हरित क्रांति के जनक स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की जन्म शताब्दी मनायी गयी। आई ई एच ई के कृषि संकाय द्वारा आयोजित गरिमामयपूर्ण आयोजन में संस्थान के संचालक **डॉ. प्रज्ञेस कुमार अग्रवाल** मुख्य अतिथि के बतौर उपस्थित रहे। इस अवसर पर संस्थान के बायोटेक्नालॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष **डॉ. रुचिरा चौधरी,** कृषि संकाय के विभागाध्यक्ष **डॉ. अजय कुमार भारद्वाज,** कृषि संकाय फैकल्टी **डॉ. स्मिता राजन, डॉ. प्रतिमा शर्मा, डॉ. शुभम मिश्रा** एवं **डॉ. प्रियंका गुर्जर** की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम में बी.एस.सी. कृषि एवं बायोटेक्नालॉजी के छात्र-छात्राओं ने डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन के जीवन की संघर्ष यात्रा एवं देश के कृषि विकास में उनके अमिट योगदान को रेखांकित किया।

इस मौके पर संस्थान के संचालक **डॉ. प्रज्ञेस कुमार अग्रवाल** ने कहा कि डॉ. स्वामीनाथन सिर्फ एक कृषि वैज्ञानिक ही नहीं थे बल्कि भारतीय कृषि को नयी गति देने वाले पुरोधा थे। डॉ. स्वामीनाथन के अटूट परिश्रम एवं तकनीकी ज्ञान के प्रसार की वजह से भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना। कभी दूसरे देशों से खाद्यान्न मंगाने वाला भारत आज दूसरे देशों को खाद्यान्न गर्व के साथ दे रहा है।

डॉ. अग्रवाल ने उन्हें मानवता का सेवक बताते हुये छात्र-छात्राओं को दूसरी हरित क्रांति के लिये प्रेरित किया। कार्यक्रम में 'हरित क्रांति की भारतीय कृषि में भूमिका' परिचर्चा में संस्थान के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल में बी.एस.सी. कृषि के छात्रों को प्रायोगिक कार्य समझाते हुये फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर डॉक्टर शुभम मिश्रा।

ACE ट्रैक्टर पर आसानी से हो रहा फायनांस

श्री शैलेन्द्र सिंह
जोनल हेड (फायनांस)

श्री प्रवीण दुबे
स्टेट हेड (फायनांस)

भोपाल। एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) के जोनल हेड श्री शैलेन्द्र सिंह एवं स्टेट हेड श्री प्रवीण दुबे ने बताया कि मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में ACE ट्रैक्टर की मांग सबसे अधिक बढ़ी है।

किसानों को कंपनी द्वारा फायनेंश के साथ-साथ सरकारी बैंक के साथ तेजी से फाइनेंस मिल रहा है जिससे किसानों को बैंक द्वारा बड़ी मात्रा में लोन उपलब्ध कराया जा रहा है। विगत वर्ष 2024 में ACE ट्रैक्टर कंपनी ने कई बैंकों के साथ साझेदारी की है। श्री प्रवीण दुबे ने बताया कि हमारी कंपनी ने एक्सिस बैंक, एच.डी.एफ.सी. बैंक, चोला फाइनेंस, अदानी फाइनेंस, भारतीय स्टेट बैंक, सेन्ट्रल बैंक, यूनियन बैंक एवं पंजाब नेशनल बैंक जैसे बैंकों के साथ साझेदारी की है। कंपनी जोनल हेड फायनांस श्री शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि हम इन सारी बैंकों की मदद से किसानों को शीघ्र ही एवं बड़ी मात्रा में लोन उपलब्ध करा रहे हैं। 2025 में सभी बैंकों द्वारा हमारी कंपनी को बहुत अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ है। जिस कारण कंपनी ने बड़ी संख्या में ट्रैक्टर विक्रय किये हैं। इसी तरह साल 2025 में ACE ट्रैक्टर का प्लान है।

श्री प्रवीण दुबे ने बताया कि मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के सभी प्रमुख बैंकों से साझेदारी करके सबसे अधिक किसानों को ACE ट्रैक्टर परिवार में जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने बताया कि हमने जो लक्ष्य रखा है वह सभी बैंकों के सहयोग से पूरा करेंगे साथ ही हमने जिन बैंकों से साझेदारी की है उन सभी का हमको पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। साथ ही हमारी कंपनी कदम से कदम मिलाकर चलने में कोई कमी नहीं कर रही है।

चालू वर्ष 2025 में हम इस प्रयास में रहेंगे कि कंपनी के ट्रैक्टर अधिक से अधिक फाइनेंस हों जिससे सभी किसानों को ट्रैक्टर लेने में आसानी हो। श्री प्रवीण दुबे ने बताया कि हमारे पास सभी प्रमुख बैंक है जिससे किसानों को आराम से फाइनेंस हो जायेगा। इसी के साथ ACE ट्रैक्टर कंपनी अपने परिवार में सबसे अधिक किसानों को जोड़ने का काम कर रही है। इस वर्ष कई किसान हमारे साथ जुड़ेंगे। हमारी कंपनी हर एक किसान को परिवार का हिस्सा मानती है। किसानों को ट्रैक्टर ऋण दिलाने में कंपनी एवं डीलर्स पूरा सहयोग करते हैं।

ट्रॉपिकल का टैग स्टेम-ली

धान के लिये सबसे सुरक्षित दानेदार कीटनाशक

भारत का पहला तीन सक्रिय तत्वों वाला पेटेन्टेड कीटनाशक

इंदौर। देश की प्रमुख जैविक उत्पादक कंपनी ट्रॉपिकल एग्रो सिस्टम (इं.) प्रायवेट लिमिटेड ने धान उत्पादक किसानों के लिये सबसे सुरक्षित दानेदार कीटनाशक टैग स्टेम-ली लांच किया है। यह कंपनी का पेटेन्टेड उत्पाद है। देश का पहला तीन तत्वों वाला दानेदार कीटनाशक है। टैग स्टेम-ली धान में लगने वाले तना छेदक और पत्ता लपेटक कीट पर तुरंत असर करता है। इसकी वजह से धान की सुरक्षा लंबे समय तक होती है। टैग स्टेम-ली से डेड हार्ट और सफेद बालियों से पूरी तरह छुटकारा मिलता है। इसका असर खरीफ और रबी दोनों मौसम की फसलों पर रहता है। ट्रॉपिकल के टैग स्टेम-ली का प्रयोग 2 किलोग्राम प्रति एकड़ खाद अथवा रेत के साथ मिलाकर करना अनुशंसित है। इसके दोहरे नियंत्रण से दो बड़े कीट तना छेदक एवं पत्ती लपेटक पर प्रभावी वार करता है। तीन सक्रिय घटक फार्मूला वाला टैग स्टेम-ली धान की फसल के लिये सबसे शक्तिशाली समाधान है। इसके माध्यम से धान की फसल को पूरी तरह सुरक्षित रखा जा सकता है। मध्यप्रदेश स्थित ट्रॉपिकल एग्रो के समस्त अधिकृत विक्रेताओं के पास यह उत्पाद उपलब्ध है। टैग स्टेम-ली को लांच करने के पूर्व गहन अनुसंधान किया गया है। ट्रॉपिकल एग्रो ने इसे विशेष रूप से पेटेन्टेड करवाया है।

सदस्यता फार्म

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824
मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675
E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम..

संस्था का नाम..

पूरा पता..

ग्राम..................पोस्ट..................तहसील..................

जिला..................राज्य..................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).................. (शब्दों में)..................

बैंक का नाम.................. ड्राफ्ट चेक क्रमांक..................

दिनांक.................. संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान.................. प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील
दिनांक..................

100% Swadeshi

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

सफलता की ओर बढ़ते कदमों से जुड़ने का सुनहरा अवसर

डीलरशिप हेतु आमन्त्रण

- भारत की नं. 1 केन निर्माता कंपनी ।
- भारत की सबसे तेजी से बढ़ती हुई ट्रैक्टर कम्पनी ।
- ACE ट्रैक्टर–15 से 90 एच.पी. श्रेणी की विशाल रेंज।
- दमदार इंजन के साथ 2WD एवं 4WD वेरियेंट में उपलब्ध।
- किर्लोस्कर इंजन में भी उपलब्ध।
- तुलनात्मक ज्यादा सी.सी. क्षमता।
- ज्यादा PTO एच.पी.।
- साईड शिफट, पॉवर स्टीयरिंग, रिवर्स PTO, तेल में डूबे ब्रेक, DCV।
- बेहतरीन फाईनेंस सुविधा।

सिर्फ हम इस्तेमाल करते हैं 100% विश्व स्तरीय ब्रांड:

एम.आरएफ टायर्स, एक्साइड बैटरी, एस.के.एफ. व्यरिंग, लूक क्लच, टीवीएस के नट बोल्ट्स, करारो एक्सल, टेलब्रोस गैस्कट, करारो ट्रांसमिशन*

फाईनेंस सुविधा उपलब्ध

AXIS BANK, SBI, HDFC Bank of India, Indian Bank, Chola, adani Capital, SHRIRAM

डीलरशिप के लिऐ कृपया सम्पर्क करें :

+91-7566531192, 9098682530

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

B-205, Corporate Zone, C-21, Mall Misrod, Hosangabad Road, Bhopal -462026

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार